भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

सत्यमेव जयते

स्वच्छता ही सेवा

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

चतुर्थ अंक - 2024

नाथ नगरी कॉरिडोर , बरेली
का एक भव्य द्वार

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

चतुर्थ अंक - 2024

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

संपादक
श्री दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष सहयोग

श्री संदीप शुक्ला
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

श्रीमती सुमन सक्सेना
अधीक्षक

श्री कौशल सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

श्री मो. आतिर अंसारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कांप्लेक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शिनी नगर, बरेली - 243122

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

सत्यमेव जयते

विदेश राज्य मंत्री एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Parliamentary Affairs
Government of India

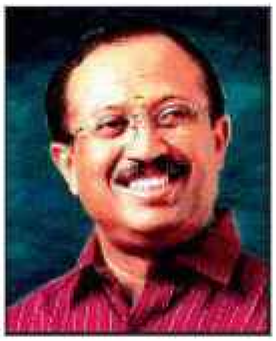

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपने सफल प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के चतुर्थ अंक (वर्ष 2023-24) का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हेतु पत्रिका प्रकाशन एक प्रशंसनीय पहल है। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से पाठकों में राजभाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा पाठकों को पासपोर्ट, हिंदी व अन्य विषयों पर नवीनतम जानकारी प्राप्त होगी, जिससे हिंदी का प्रसार होगा ।

''पांचाल'' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(वी. मुरलीधरन)

Office: Room No. 144-A, South Block, New Delhi- 110 011. Tel-: 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax: 011-23011425

मीनाक्षी लेखी
Meenakashi Lekhi

सत्यमेव जयते

विदेश राज्य मंत्री एवं
संस्कृति राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Culture
Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका प्रकाशन में निरंतरता बनाए रखते हुए अपनी गृह पत्रिका ''पांचाल'' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

पासपोर्ट कार्यालय देश के अंदर स्थित आम जनता से जुड़े हुए विदेश मंत्रालय के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं अत: इनमें राजभाषा के प्रसार का असर दूरगामी होने की सम्भावना है। पासपोर्ट कार्यालय बरेली ''क'' क्षेत्र में स्थित है जहां पर हिंदी मातृभाषा भी है, इससे हिंदी में काम करना थोड़ा आसान हो जाता है तथापि कार्यालय में हिंदी में सतत प्रगति पासपोर्ट कार्यालय, बरेली की कार्यप्रणाली का द्योतक है।

जैसा कि हमारी राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की है। अत: मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में बहुत सहयोग मिलेगा तथा पाठक हिंदी के अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली से जुड़े सभी कार्मिकों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

मीनाक्षी लेखी
(मीनाक्षी लेखी)

नई दिल्ली
22 जनवरी, 2024

कार्यालय: कमरा न. 181, विदेश मंत्रालय, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली–110011
Office: Room No. 181, South Block, New Delhi -110 011 Tel:- 011-23017763 E-mail: mos.ml@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका '**पांचाल**' के **चतुर्थ संस्करण** का प्रकाशन किया जा रहा है यह प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास की दिशा में एक प्रशंसनीय कार्य है।

हिंदी आज न केवल प्रशासनिक कार्यों की भाषा है अपितु यह विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है तथा इसके कार्यक्षेत्र का निरंतर विस्तार हो रहा है।

मुझे आशा है कि 'पांचाल' पत्रिका कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग को निरंतर बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

(मुक्तेश कु परदेशी)
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

नई दिल्ली
दिनांक: 25 जनवरी 2024

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

डॉ0 मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव
DR. MEENAKSHI JOLLY
JOINT SECRETARY
Telefax: 23438130
E-mail: jsol@nic.in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
चतुर्थ तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन,
4th FLOOR, N.D.C.C.- II BHAWAN
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली द्वारा अपनी राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इसलिए यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्र-पत्रिकाओं की राजभाषा हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्ट भूमिका है और इससे हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

मुझे विश्वास है कि 'पांचाल' में प्रकाशित सामग्री से अधिकारी/कर्मचारी लाभान्वित होंगे और हिन्दी में अपना अधिकाधिक कामकाज करने के लिए प्रेरित होंगे।

पत्रिका के नए अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

मीनाक्षी जौली

(डॉ. मीनाक्षी जौली)

सत्यमेव जयते
विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **पासपोर्ट कार्यालय, बरेली** द्वारा '**पांचाल**' पत्रिका के **चतुर्थ अंक** का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय की गृह पत्रिका कार्मिकों की सृजनशीलता को प्रकट करने के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार का भी एक प्रमुख माध्यम होती है।

राजभाषा हिंदी में सभी भाषाओं और संस्कृतियों को साथ लेकर आगे बढ़ने की अद्भुत क्षमता है। आज हिंदी में भी सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग का दायरा बढ़ा है इसका मुख्य उदाहरण ब्लॉग, ट्विटर और फेसबुक आदि सोशल मीडिया माध्यमों में भी इस भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग किये जाना है।

मैं, 'पांचाल' पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले समस्त कर्मियों को इसकी सफलता के लिये हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

टी- आर्म

(टी. आर्मस्ट्रांग चांगसन)
संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)
दूरभाष: 011-23086665
ई. मेल: jshindi@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'पांचाल' का चतुर्थ अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

वस्तुत: राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व होता है। 'पांचाल' का नियमित प्रकाशन यह सिद्ध करता है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली इस दृष्टि से उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

भारत चिरकाल से संस्कृति और कला के क्षेत्र में अत्यंत संपन्न रहा है। अनेक भाषाएं और संस्कृतियां हमारे देश की विरासत हैं। सांस्कृतिक और भाषाई विविधता से भरे इस गौरवशाली देश में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच सदियों से हिंदी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित रही है और सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। इसके अलावा, हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, सरलता और सुबोधता में निहित है। इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ही भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया था।

संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए हमारा दायित्व है कि हम सब मिलकर प्रयास करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों से भी राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित कराएँ ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सकें। उम्मीद है, 'पांचाल' इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

पत्रिका के नवीनतम अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

रविन्द्र जायसवाल

(रविन्द्र प्रसाद जायसवाल)

संदीप कुमार, भा. रा. से.
मुख्य आयकर आयुक्त,
बरेली।

सत्यमेव जयते

मुख्य आयकर आयुक्त
Chief Commissioner of Income Tax
आयकर भवन, कमला नेहरू मार्ग
Aaykar Bhavan, Kamla Nehru Marg
सिविल लाइंस, बरेली-243001
Civil Lines, Bareilly-243001

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका ''पांचाल'' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिंदी मात्र राजभाषा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने वाली राष्ट्रभाषा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका ''पांचाल'' का यह अंक राजभाषा हिंदी का स्वर मुखरित करने में सफल होगा और विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा देगा। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक के प्रकाशन से विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा उभर कर सामने आएगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

(संदीप कुमार)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय,
बरेली।

संरक्षक की कलम से

मनुष्य सर्वश्रेष्ठ जीवधारी इसलिए माना जाता है क्योंकि वह ज्ञानवान होता है। अपने ज्ञान को अभिव्यक्त करने के कई माध्यम होते हैं तथापि भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम होती है, और कोई भी व्यक्ति अपनी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही दे सकता है। अपनी बात ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए हमें सर्वसुलभ भाषा का प्रयोग करना चाहिए और यदि भाषा सर्वसुलभ के साथ–साथ सरल हो तो फिर क्या ही कहना। अब यदि हम इन मानकों पर अपने देश में सर्वोत्तम भाषा की बात करें तो हिंदी भाषा का ही नाम आयेगा। इसकी पहुँच अधिसंख्य लोगों तक है। यह सरल है। शायद इसीलिए संविधान सभा में सम्मिलित मनीषियों ने बहुत सोच समझकर हिंदी को भारत गणराज्य की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में पहचान दी गई तथापि अभी तक हिंदी को उसका उचित स्थान नहीं मिल पाया है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों में राजभाषा के विषय में काफी सकारात्मक कदम उठाये गए हैं। जिनमें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, संसदीय समिति द्वारा कार्यालयों का नियमित निरीक्षण व विभिन्न प्रकार के टूल्स के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का सरलीकरण आदि सम्मिलित हैं।

वास्तव में हिंदी ने आमजीवन में तो बहुत प्रगति की है, परन्तु इसको राजभाषा के रूप में अभी बहुत आगे ले जाने की जरूरत है। हिंदी को उसका स्थान तब मिलेगा जब हमें अनुवाद की जरूरत नहीं पड़ेगी। किसी दूसरी भाषा के पीछे चलने वाली भाषा की परिधि से हमें हिंदी को निकालना होगा। हमें गुलामी की द्योतक भाषा को आगे के स्थान से हटाना होगा। मेरा मानना है कि हर भाषा को उसका स्थान मिले और हर भाषा को सम्मान मिले लेकिन राजभाषा की कीमत पर नहीं। राजभाषा और अन्य भाषाओं में वही अंतर रहना चाहिए जो माँ और मौसी में होता है मेरा मतलब यह है कि मौसी का पूरा सम्मान है लेकिन मौसी, माँ के बाद ही आनी चाहिए।

राजभाषा के विकास की जिम्मेदारी हम सभी सरकारी सेवकों की ही है। यदि हम सभी कृत संकल्पित होकर राजभाषा को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग में लायेंगे तो निश्चित रूप से हम संविधान में दी गई अपनी एक जिम्मेदारी का अनुपालन सुनिश्चित कर पायेंगे। एक छोटी सी शुरूआत कर के देखिए और आप शीघ्र पायेंगे कि यह करना कितना आसान है और उसके परिणाम कितने सुखद होंगे। इस मामले में अपने कार्यालय का अपना अनुभव साझा करना चाहता हूँ कि धीरे–धीरे हमारे कार्यालय ने राजभाषा में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए आज हम नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति बरेली में एक मानक कार्यालय के रूप में देखे जाते हैं। अन्य कार्यालयों को हमारे कार्यालय का नाम लेकर कहा जाता है कि आप भी पासपोर्ट कार्यालय, बरेली की तरह बनने का प्रयास कीजिए। इसका कारण यह है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली में राजभाषा के प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। हमारे कार्यालय में शत–प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है एवं राजभाषा के सभी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित

किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप कार्यालय नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, बरेली द्वारा लगातार राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया जा रहा। इसके अतिरिक्त विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पासपोर्ट कार्यालय बरेली को 'क' क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में लगातार दो बार पुरस्कार प्रदान किया गया, साथ ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हमारे कार्यालय को पिछले दो वित्तीय वर्षो में उत्तर क्षेत्र -2 के केंद्रीय कार्यालयों में 11-50 कार्मिकों वाले कार्यालयों की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

किसी भी क्षेत्र में एक स्तर पा लेना जितना कठिन होता है उससे कठिन उस स्तर को बनाए रखना और उससे आगे बढ़ना होता है अत: अब हमारे सामने एक और जिम्मेदारी है कि हम कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में इस स्तर से ऊपर ले जाए और इसके लिए हम सतत प्रयासरत भी हैं। इसी क्रम में कार्यालय ने पत्रिका का चौथा अंक निकालने का निश्चय किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पिछले तीन अंकों से बेहतर होगा और हम पाठकों को ज्ञानवर्धक और रुचिकर साहित्य का समागम प्रस्तुत कर पाएंगे।

अंत में मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं एवं बधाइयां देता हूँ।

(शैलेन्द्र सिंह)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय,
बरेली

शुभ संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है।

पत्रिका प्रकाशन से हम अपने कार्यालय द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों में गति लाते हैं, साथ ही पाठकों एवं अन्य सरकारी कार्यालयों को हिंदी के प्रति जागृत करने का एक छोटा सा प्रयास करते हैं। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार में बहुत सहयोग मिलेगा तथा सभी कार्मिक व पाठक हिंदी के अधिक प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

इस शुभ अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली से जुड़े सभी सहकर्मियों का पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ तथा यह कामना करता हूँ कि यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक लगे।

(संदीप शुक्ला)
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

दिनेश सिंह
सचिव
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
पासपोर्ट कार्यालय, बरेली।

संपादकीय

पासपोर्ट कार्यालय बरेली की राजभाषा पत्रिका पांचाल के पहले तीन अंकों के सफल प्रकाशन के बाद चतुर्थ अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है।

पांचाल के तृतीय अंक को आप सभी ने जो प्रेम और स्नेह दिया है उसने हमें इस अंक को और बेहतर करने की प्रेरणा दी है। पिछले अंक के संबंध में विभिन्न महानुभावों ने अपनी उत्साहवर्धक टिप्पणियां प्रेषित की हैं उन सभी को सादर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हम पत्रिका के इस अंक की ओर आगे बढ़ते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के अधिकतर अधिकारियों एवं कर्मचारियों, उनके परिवार के सदस्यों तथा पूर्व सहयोगियों ने अपनी अपनी कृतियां दी हैं। इस अंक में आपको विभिन्न विधाओं पर रचनाएं मिल जाएंगी। एक तरफ ज्ञानवर्धक लेख हैं तो दूसरी तरफ मनोरंजक कविताएं हैं साथ ही कुछ हास्य व्यंग भी है, जबकि गत वर्षों की भांति बच्चों की कलाकारी का भी कुछ अंश हमारी पत्रिका में समाहित है। इसके अतिरिक्त हमने प्रयास किया है कि इस पत्रिका के माध्यम से पासपोर्ट कार्यालय बरेली में पिछले लगभग एक वर्ष में हुई गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से आप तक पहुंचाएं। कुल मिलाकर पत्रिका के इस इस अंक को ऐसा डिजाइन करने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति की रूचि का कुछ न कुछ इसमें मिल जाए तथा हिंदी के विकास में एक आहुति हमारी पत्रिका के इस अंक की भी रहे।

यहाँ पर थोड़ी सी चर्चा पासपोर्ट कार्यालय बरेली में राजभाषा में हो रहे कार्यों की भी जरूरी है। हमारा कार्यालय पिछले कई वर्षों से राजभाषा के संबंध में अपनी जिम्मेदारी को निभा रहा है। हम इस बात के लिए कृत-संकल्पित हैं कि हिन्दी को उसका उचित स्थान और सम्मान मिले और इसके लिए हम अपने स्तर से जो कर सकते हैं वह कर रहे हैं। इसी का असर यह है कि अब हमें राजभाषा में हर मंच से पहचान मिलनी शुरू हो गई है। इसमें राजभाषा विभाग, विदेश मंत्रालय व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सभी सम्मिलित हैं। हम लगातार राजभाषा के काम में वांछित सुधार कर रहे हैं। राजभाषा की नीति ही प्रेरणा और प्रोत्साहन की है और राजभाषा के कार्य को आगे बढ़ाने में पत्रिका प्रकाशन उत्प्रेरक का कार्य करता है क्योंकि राजभाषा की पत्रिका प्रकाशन में कार्यालय के सभी सहयोगी एवं उनके परिवार के सदस्य अपना योगदान देते हैं। इससे सभी कार्मिकों को कार्यालय में हिंदी में काम करने की स्व-प्रेरणा मिलती है और कार्यालय में हिन्दी में काम करने का माहौल बना रहता है। फलस्वरूप पासपोर्ट कार्यालय बरेली राजभाषा के कार्य में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को निरंतर प्राप्त कर रहा है । इस बारे में हमारी कोशिशों को दर्शाती एवं उन लोगों को प्रेरित करती,जो सोचते हैं कि हिन्दी में काम आसान नहीं है, श्री सोहन लाल द्विवेदी जी की कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं:-

लहरों से डरकर, नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की, कभी हार नहीं होती।
नन्ही चींटी, जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास, रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत, बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की, कभी हार नहीं होती।।

पत्रिका के इस अंक को इस रुप तक पहुंचाने के लिए अपार सहयोग देने वाले कार्यालय के सभी सहयोगियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस आशा और विश्वास के साथ पांचाल पत्रिका का चतुर्थ अंक हमारे पाठकों को अत्यंत रुचिकर एवं मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक लगेगा, यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपनी टिप्पणी जरूर भेजें ताकि अपनी कमियों को दूर कर हम भविष्य में और बेहतर करने के लिए प्रेरित हों और लगातार आपके समक्ष परिमार्जित पत्रिका प्रस्तुत करते रहें ।

दिनेश सिंह

(दिनेश सिंह)
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

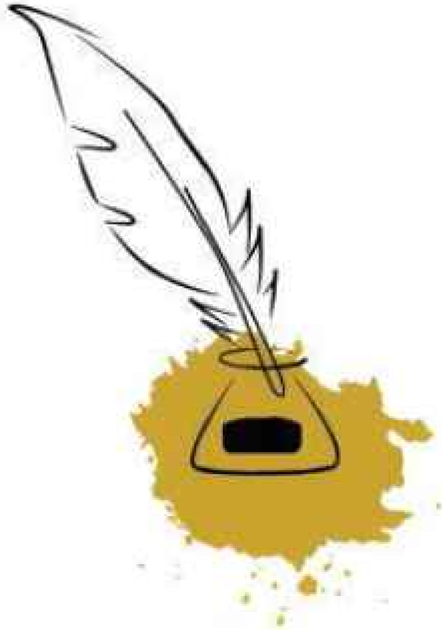

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	स्वच्छ भारत, विकसित भारत	शैलेन्द्र सिंह	15
2	भाषाई दृष्टि से हिन्दी की समृद्धता	मोहन लाल मीणा	16-18
3	श्रीलंका	संदीप शुक्ला	19
4	दोस्त और ज़िन्दगी	धर्मवीर सिंह	20
5	उनको मेरा सलाम	अब्दुल समद	20
6	सोशल मीडिया	श्रीश श्रीवास्तव	21
7	डरते डरते	खीम सिंह	22
8	कुछ सरल लिखा जाए	सुमित कश्यप	22
9	मिट्टी और पानी जीवन का एक स्रोत	सिद्धार्थ प्रताप सिंह	23
10	मैं अक्सर रो देता हूँ	अभिनव सिंह	24
11	धरती माँ का ऋण	कौशल सिंह	24
12	धैर्य की शक्ति	भूमिका पाल	25
13	सीखना	श्रेय कृष्ण सक्सेना	25
14	काश, हम कभी बड़े न होते	नीतू वर्मा	26
15	हिन्दी का उत्थान	मनीष शर्मा	26
16	राम मंदिर निर्माण की संघर्ष गाथा	दिनेश चन्द्र	27-28
17	बाकी है	गौरी श्याम सक्सेना	28
18	माँ-बाप	विनय चन्द्र	29
19	सूर्य है मेवाड़ का	संदीप सिंह	30-31
20	बचपन का ज़माना	मोहम्मद आतिर अंसारी	31
21	मेरी कार की चाभी	दिनेश सिंह	32-33
22	गज़ल	अलीम हुसैन	34
23	रिश्ते	अनुराग दुबे	34
24	स्वास्थ्य का रहस्य	मोनिका शुक्ला	35
25	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)	मनीष कुमार सिंह	36
26	एकता	अहमद फराज़	37
27	स्वच्छता	विक्रांत श्रीवास्तव	37
28	बूढ़े आदमी की खुशी का राज	योगिता बिष्ट	38
29	स्वास्थ्य हेतु	डाल चन्द	38
30	समस्याओं का रोना	सोनी बिष्ट	39
31	सच्चे दोस्त की निशानी	गिरीश चन्द्र	39

छायाचित्र अनुक्रम

32	स्वच्छता पखवाड़ा		40
33	हिन्दी दिवस एवं कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार		41
34	समाचार पत्र की झलकियाँ		42
35	प्रशस्ति-पत्र		43
36	बाल-कलाकार		44

स्वच्छ भारत, विकसित भारत

श्री शैलेन्द्र सिंह
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

हम जब अपने घर में पूजा करते हैं या किसी पूजाघर में पूजा के लिए सम्मिलित होते हैं तो प्रभु के आह्वान से पहले पूजा के स्थल को स्वच्छ एवं शुद्ध करते हैं। इसी तरह अपने भारत को विकसित एवं स्वच्छ बनाने के लिए हमारे प्रधानमंत्री और सरकार के आह्वान पर सन 2014 में दुनिया के सबसे बड़े स्वच्छता अभियान की शुरूआत भारत में हुई थी। वर्ष दर वर्ष हमारा देश स्वच्छता में नित नए आयाम पाता जा रहा है। उसी क्रम में हमने मिलकर कई लगातार प्रयास किये हैं। इसमें भारत की सरकार, उसके अंतर्गत इकाई, प्राइवेट सेक्टर, पब्लिक सेक्टर, ऑफिस, मोहल्ला, ग्राम ने भारत की जनता के साथ मिलकर अभूतपूर्व सफलता पाई है।

जिसमें कि हर घर टॉयलेट का निर्माण, सैनिटेशन की व्यवस्था एक बहुत बड़ी उपलब्धता है । देश के हर एक घर, मोहल्ला, ऑफिस में स्वच्छता अब दिखाई देती है । इससे स्वच्छता के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। विगत दो वर्षो में हमने अपने कार्यालय में सफाई पर विशेष ध्यान दिया है, जिसमें हमारे महत्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं:-

- सिंगल यूज प्लास्टिक को ऑफिस में निषेध कर दिया गया है।
- सभी लोग यहाँ पर स्टील की बोतल व ग्लास पानी पीने के लिए एवं कपड़े का बैग दैनिक कार्यो के लिए साथ रख रहे हैं।
- ऑफिस में कागजों का इस्तेमाल कम किया जा रहा है।
- डिजिटलाइजेशन की अहमियत बढ़ाई जा रही है।
- शौचालय एवं जल निकास की व्यवस्था सुदृढ की गई है।
- ऑफिस के फर्नीचर को यूनिफार्म किया गया है।
- ऑफिस को पौधों से भरा गया है।

इसके अलावा हम स्वच्छता पखवाड़े को बहुत ही गंभीरता एवं उत्साह से मना रहे हैं। विगत स्वच्छता पखवाड़े (दिनांक 15 जनवरी से 31 जनवरी 2024) में हमने श्रमदान, स्वच्छता पर पदयात्रा, स्वच्छता की शपथ, जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक, स्कूली बच्चों के बीच स्वच्छता पर चित्रकला प्रतियोगिता और विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की। इसमें पासपोर्ट कार्यालय बरेली की टीम का उत्साह देखते ही बन रहा था। बरेली में पासपोर्ट कार्यालय की टीम को इस मेहनत और उत्साह एवं इसकी वजह से आई सकारात्मक उपलब्धि को ढेरों बधाई देना चाहता हूँ। इस दौरान एक बहुत ही सराहनीय बात देखी गयी कि स्वच्छता की इस पहल में पासपोर्ट कार्यालय के सभी सहकर्मियों ने खुद से अपनी तरफ से पूरी सहभागिता दिखायी जिससे हम सभी के अन्दर एक टीम भावना देखी गई ।

इस अभूतपूर्व प्रयास और विश्वास के साथ हम इस प्रक्रिया को काफी प्रभावी तौर पर होते हुए देख पा रहे हैं, जिससे कार्यालय, मोहल्ला, स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थलों में व्यापक प्रभाव होते हुए दिख रहे हैं। हम इस प्रयास को सतत रखने का संकल्प लेते हैं।

भाषाई दृष्टि से हिन्दी की समृद्धता

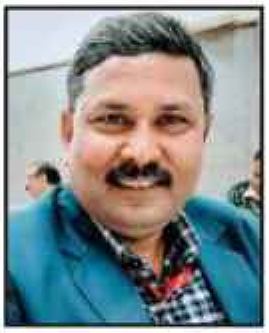

मोहन लाल मीणा
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

भारत देश भौगोलिक दृष्टि से दुनिया का 7वां सबसे बड़ा देश है। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या कोष की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्याा 142.86 करोड़ है, इस लिहाज से भारत की आबादी दुनिया में सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त, भारत में दुनिया के सभी धर्मावलंबी अर्थात् हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी समुदाय के लोग सौहार्दपूर्ण माहौल में मिलजुलकर रहते हैं। इसी प्रकार भारत में विभिन्न जातियों के लोग भी खुशहाल जिंदगी गुजर-बसर करते हैं।

कुल मिलाकर, भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है। चाहे बात धर्म, आस्था, विश्वास और पंथ की हो, चाहे बात संस्कृति की हो और चाहे बात भाषा की हो या रहन-सहन, खान-पान की हो, भारत हर मामले में समृद्ध देश है।

जहां तक राजभाषा हिंदी का सवाल है, हिंदी कोई एक भाषा नहीं है बल्कि यह भारतीय भाषाओं का एक समूह है। हिंदी भाषा की समृद्धता में जितना योगदान भारतीय भाषाओं का है, लगभग उतना ही योगदान विदेशी भाषाओं का भी है। यहां इस बात का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि भारत देश पर समय-समय पर विभिन्न विदेशी आक्रांताओं का शासन रहा है इसका विवरण इस प्रकार है:

1. मुगल शासन काल 1526 ई0 से 1858 ई0 तक रहा (332 साल)
2. ईस्ट इंडिया कंपनी 1785-1858 ई0 तक रहा (73 साल)
3. ब्रिटिश शासन काल 1757 ई0 से 1947 ई0 तक रहा (190 साल)

यहां यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा कि किसी भौगोलिक प्रदेश की भाषा उस पर शासन करने वाले साम्राज्य की भाषा होती है। इस लिहाज से भारत में समय-समय पर अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व रहा है। अत: स्वाभाविक रूप से हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति में इन भाषाओं के योगदान को कमतर नहीं आंका जा सकता है। उपर्युक्त के अतिरिक्त, आज की हिंदी भाषा में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, बंगाली, असमी, उड़िया, शौरसैनी, मगधी, उर्दू, राजस्थानी, मैणी, भीली, सिंधी, हरियाणवी, पंजाबी, गढ़वाली, कुमाउँनी, नेपाली आदि भाषाओं और बोलियों के शब्द शामिल हैं। अत: आज की हिंदी भाषा दुनिया की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है। आपको विदित है कि भारत देश वर्ष 1947 में विदेशी आक्रांताओं से आजाद हुआ। भारतीय गणराज्य की स्थापना हुई। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बना। भारतीय संविधान के अनुच्छेद में 343(1) में उल्लेख किया गया है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी ही संघ सरकार की राजभाषा होगी। इसके अलावा, संविधान की 8वीं अनुसूची में भारत गणराज्य की 22 भारतीय भाषाओं को आधिकारिक भाषाओं के रूप में सूचीबद्ध किया है। इससे यह स्वत: सिद्ध होता है कि हिंदी भाषा न केवल संघ सरकार की राजभाषा है बल्कि 14 राज्यों की भी राजभाषा है। वैसे भारत देश में 121 भाषाएं और 270 मातृभाषाएं बोली जाती हैं। यहां यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा कि हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इसके अलावा हिंदी हमारे देश की सबसे ज़्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और यह देश की संपर्क भाषा भी है।

तो आइए आपको बताते हैं कि कैसे ध्वनि, स्वरूप, रंग, व्यक्ति, नाम, स्थान नाम, कार्य आदि के आधार पर

शब्द जन्म लेते या बनते हैं। हिंदी में 'सैंडो' उस बनियान या गंजी को कहते हैं जिसमें बांह या आस्तीन नहीं होती है। सैंडो मूलत: एक पहलवान का नाम था, जिसने पहली बार इस प्रकार का बनियान पहना था। बाद में उस पहलवान के नाम पर ही इस विशेष प्रकार के बनियान का नाम चल पड़ा। जैसे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्री जवाहर लाल नेहरू जी के नाम पर नेहरू जैकेट और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर मोदी कुर्ता का चलन भारत में खासा प्रसिद्ध है। सैंडो तो मर गया लेकिन उसका नाम इस रूप में अमर है। गुजरात के प्रसिद्ध शहर सूरत को कभी पुर्तगालियों ने अपना केंद्र बनाया था। पुर्तगाली सूरत से ही भारत के कई क्षेत्रों में खाने की तम्बाकू भेजते थे। पुर्तगालियों के तम्बाकू का व्यापार बढ़ने के साथ ही बहुत से स्थानों पर 'सूरत' से आने वाली 'तम्बाकू' को 'सुरती' या 'सुर्ती' कहा जाने लगा। हिंदी प्रदेश के कई पूर्वी क्षेत्रों में आज भी खाने की तम्बाकू को सुर्ती कहते हैं। ऐसे ही 'चीनी' शब्द चीन पर आधारित है। चीनी आज जिस रूप में मिलती है, वह पहले-पहल चीन में ही बनी थी। इसी प्रकार, 'मिस्त्री' का संबंध मिस्र देश से है। मिस्त्री शब्द भारत में वहीं से आया है। 'एटलस' शब्द हिंदी का न होते हुए भी हिंदी का अपना हो गया है। नक्शों की किताब को एटलस कहते हैं। इसकी उत्पत्ति की कथा बड़ी विचित्र है। 'एटलस' एक दैत्य था, जिसका नाम यूनानी पौराणिक कथाओं में मिलता है। कथाओं के मुताबिक 'एटलस' उन खम्भों का रक्षक था जिस पर स्वर्ग टिका है। नक्शे की पुस्तक के लिए इसके नाम के प्रयोग में प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता जान मरकेटर (1512-1596) का हाथ है। उन्होंने अपने नक्शों की किताब के कवर पर एक फोटो लगवाई थी जिसमें एक दैत्य ने अपने कंधों पर विश्व को उठा लिया था। उसके नीचे एटलस शब्द छपा था। उसी को लेकर नक्शे की पुस्तकों के लिए यह शब्द प्रचलित हो गया और उस शब्द का प्रयोग प्राय: नक्शों की किताब के अर्थ में ही होता है।

हिंदी भाषा ने अपना विकास ही अनेक देशी और विदेशी भाषाओं और बोलियों के शब्दों को बड़े पैमाने पर अपनाने से किया है। शब्दों का विस्तार भाषा को ताकतवर और लंबे समय तक जीने के साथ ही लोकप्रिय भी बनाता है। हिंदी में उत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के 4 भेद किए गए हैं। ये भेद तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज कहलाते हैं। विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिंदी में इस्तेमाल किए जाने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी या विदेशज कहलाते हैं। तदनुसार अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी के ऐसे अनेक शब्द हिंदी में आए और इसमें रम गए हैं।

अंग्रेजी- आमतौर पर अंग्रेजी दुनियाभर में बोली और समझी जाने वाली भाषा है। अंग्रेजी के कॉलेज, पेंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, टिकट, मशीन, कम्प्यूटर, सिगरेट, साइकिल और स्टेशन जैसे असंख्य शब्द अब हिंदी भाषा को समृद्ध कर रहे हैं।

फारसी- आपको जानकर हैरानी होगी कि हमारी भाषा का नाम हिंदी भी फारसी का शब्द है। सांस्थानिक तौर पर अभी यह भाषा काफी असरदार रही है। फारसी भाषा के शब्द अनार, चश्मा, जमींदार, कुरान, नमक, नमूना, बीमार, रूमाल, आदमी, गंदगी आदि सैकड़ों शब्द भी हिंदी को सौंदर्य प्रदान कर रहे हैं।

अरबी- अरबी इस्लाम मजहब की भाषा है और विश्व प्रसिद्ध कुरान-ए-शरीफ अरबी भाषा में ही लिखी गई है। अरबी भाषा के शब्द औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, रिश्वत, आदत, कैदी, मालिक, गरीब हिंदी को तहज़ीब सिखाते प्रतीत होते हैं।

उर्दू- उर्दू दक्षिण एशिया के मुसलमानों द्वारा बोली जाती है। उर्दू अधिकांशत: नस्तालीक़ लिपि में लिखी जाती है जो अरबी-फारसी लिपि का एक रूप है। उर्दू दाएं से बाएं लिखी जाती है। भारत में उर्दू देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। उर्दू तर्जुमा के अखबार, आवाज, आराम, अंदर, अफसोस, आदत, इन्कलाब, इमारत, गज़ल, जवान जैसे हजारों शब्द हिंदी में

घुलमिलकर इसकी खूबसूरती बढ़ा रहे हैं।

चीनी भाषा से चाय, लीची, कारतूस, सिंदूर, चीकू और चीनी शब्द चीन के साथ हमारे आपसी संबंधों को दर्शाते हैं। इसी प्रकार तौलिया, तंबाकू, आला, अलमारी, इस्पात और गोदाम जैसे पुर्तगाली शब्द भी हिंदी ने आत्मसात कर लिए हैं। इसी तरह, तोप, कुरान, बादाम, बाजार, लश्कर, हफ्ता जैसे तुर्की भाषा के शब्द और ताजा, गुलाब, जाम, दिमाग, हुनर और चरागाह जैसे पर्शियन शब्द हिंदी जुबान के अभिन्न अंग हो गए हैं।

हिंदी अपनी इसी लचीलता की विशेषता के कारण आज बोलचाल से लेकर मीडिया (प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक) व्यवसाय, फिल्म और बाजार की बड़ी भाषा बन गई है। अत: हिंदी आज विश्व की सबसे समृद्ध भाषा बन गई है। वह दिन दूर नहीं जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा होगी। भौगोलिक क्षेत्रफल और आबादी के लिहाज से भारत दुनिया में अपना निश्चित स्थान रखता है लेकिन आजादी के अमृतकाल में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ-साथ संस्कृति और भाषा के आधार पर देश-दुनिया में अपना परचम लहराएगा।

हिंदी प्रभाग
विदेश मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
दूरभाष: 8076758675

श्रीलंका

संदीप शुक्ला
सहायक पासपोर्ट अधिकारी

नए-नए स्थानों पर भ्रमण करना हम लोगों को बहुत पसन्द है क्योंकि इससे नयी जगह की भौगोलिक व सांस्कृतिक जानकारी मिलती है और नए लोगों से मिलना व उन्हें समझने का अवसर प्राप्त होता है। इसी क्रम में कुछ समय पहले मैं सपरिवार श्रीलंका गया जो कि भारत के दक्षिण में एक छोटा सा देश है। सर्वप्रथम हम लोग दिल्ली से कोलम्बो पहुंचे वहाँ से नेगोंबो गए। वहां रात्रि विश्राम कर अगले दिन नेगोंबो के समुद्र तट का आनंद लिया और चिलाव मन्दिर गए। तत्पश्चात् हम सिगरिया गए, वहाँ मनोरम दृश्यों को देखते हुए पिडिगुला पर्वत श्रेणी पर बारह सौ सीढ़ियाँ चढ़कर प्राचीन राजाओं के स्मारक देखें।

अगले दिन हम लोग त्रिंकोमाली गए वहां सुरम्य अरण्यों को देखते हुए प्राचीन मंदिर के दर्शन किए। अगले दिन दमबुला नामक शहर गए वहां पहाड़ी पर महात्मा बुद्ध की गुफा देखी। बुद्ध जी की मूर्ति वहां विश्राम मुद्रा में अर्थात लेटी हुई है। अन्य मूर्ति भी हैं कुछ तप मुद्रा में व कुछ ध्यान मुद्रा में। उसके बाद हम लोग इलैया नामक शहर गए जहां हिरण व मयूर को खुले में भ्रमण करते देखा और उन्हें अपने हाथों से भोजन भी कराया। वह भी बिना किसी भय के भोजन स्वीकार कर रहे थे। इलैया में हमने चाय के बागान व मसाले की कार्यशाला भी देखी और वहीं, अशोक वाटिका जहाँ रावण ने सीता माता को अपहरण करके रखा था वो भी देखी। इसके साथ ही हनुमान जी के विशालकाय पद चिन्ह देखे जहाँ हम सभी नतमस्तक हो गए। इसके बाद हम कैंडी गए जो श्रीलंका की सांस्कृतिक राजधानी कहलाती है वहाँ स्थानीय नृत्य देखा और बुद्ध मठ भी गए जहाँ भगवान बुद्ध का एक दांत रखा हुआ है। तत्पश्चात हिकतिया, मिरिसा व गॉल गए। इन सभी जगह श्रीलंका के विश्व प्रसिद्ध समुद्र तट हैं साथ ही जहाँ हिकतिया में समुद्र के बीच व्हेल व डॉल्फिन मछलियां देखीं, वहीं मिरिसा में स्कूबा डाईविंग की। वहाँ कछुओं का प्रजनन केंद्र देखा जहाँ विभिन्न प्रकार के कछुओं के अंडों को सहेजा जाता है। अंडों में से निकलने पर समुद्र में छोड़ दिया जाता है। बीमार व अपाहिज कछुओं का भी उपचार और आश्रय दिया जाता है। अंत में कोलंबो में पूरा दिन भ्रमण कर उड़ान से दिल्ली वापस आ गए।

श्रीलंका में दो ही मौसम होते हैं गर्मी व बरसात, वर्ष भर उमस भरी गरमी रहती है। चारों तरफ समुद्र से घिरे रहने के कारण पूरा द्वीप हरा-भरा हैं, पूरे क्षेत्र में लगभग 50% हरियाली है और आबो-हवा बिलकुल साफ। भारत का ₹1 वहां के ₹4 के बराबर है और अमेरिका का 1 डॉलर श्रीलंका के 326 रूपये के बराबर है। इसलिए वहां बहुत महंगाई है, पर विदेशी मुद्रा सस्ती होने के कारण वहां विदेशी सैलानी बहुत आते हैं और सालभर इनकी भरमार रहती है। श्रीलंका की अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि और पर्यटन पर निर्भर है और वहां के लोगों ने इसी मुताबिक स्वयं को ढाल लिया है। पर्यटकों को अधिक से अधिक सुविधा मिले इसका ध्यान रखते हैं। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए समुद्री खेल- सर्फिंग, स्कूबा डाईविंग, व्हेल-डॉलफिन मछलियों को दिखाने के लिए मोटर बोट से गहरे समुद्र में जाना, वॉटर पार्क को शुरू किया है। साथ ही अपने प्राकृतिक, ऐतिहासिक स्थलों, मंदिर, मठों को भी संवारा है। इधर-उधर कूड़ा नहीं डालते हैं, यहाँ तक कि दुनिया के सबसे अच्छे व लम्बे साफ समुद्री तट पर कोई गंदगी नहीं दिखती और वहां दिन-रात सैलानी मस्ती करते हैं। इन्हीं सब जानकारी व संस्मरणों के साथ हमारी श्रीलंका की यात्रा संपन्न हुई ।

धर्मवीर सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

दोस्त और ज़िन्दगी

दोस्तों के साथ जीने के लिए किसी सलीके की जरूरत नहीं है,
दोस्त वो मरहम हैं जो पुराने से पुराने ज़ख्म को ठीक कर दें।

अगर मिल जायें मयख़ाने में तो शाम-ए-रंगीन कर दें,
अगर चेहरे पर हो उदासी, तो पलभर में हँसा के दूर कर दें।

मुझे परवाह नहीं है अपनी शाम की,
शाम को मिलें तो शाम-ए-रंगीन कर दें।

होते होंगे आपके भाई, दुश्मन और रिश्तेदार,
मेरे तो जितने हैं सब कमीने हैं।

रोज बीवी कसम देती है, इनसे दूर रहने के लिए,
एक ये हैं, जो रोज़, उसकी कसम दे कर पिला देते हैं।

अगर हो कभी मुकाबला मैदान, रंगमंच और मयखाने में,
आएंगे सबसे अव्वल, जाएँगे मारखाने में।

कई बार खुद को रोककर सोचता हूँ,
इनसे दूर रहकर बेहतर होगी ज़िंदगी मेरी,
मगर कमीनों के हँसते हुए चेहरे, मेरे इरादे कमज़ोर कर देते हैं।

मेरी सलाह है कि वजह-बेवजह दोस्तों से मिला करो,
कितने भी गिले शिकवे हों, बातचीत से हल किया करो।

ज़िंदगी ये न मिलेगी दुबारा, जब भी मौका मिले,
तो दोस्तों के साथ बैठकर गपशप किया करो।

अब्दुल समद
पुत्र श्री अलीम हुसैन

उनको मेरा सलाम

जो देश के जवान हैं, उनको मेरा सलाम,
जो शहीदे हिंदुस्तान हैं, उनको मेरा सलाम।

चंद दिन की ज़िंदगी है, जो सीमा पर कट रही,
जो सीमाओं पर लड़ रहे हैं, उनको मेरा सलाम।

जिसने देश के ख़ातिर, कटवा लिए अपने सर,
वह शाने हिंदुस्तान हैं, उनको मेरा सलाम।

जो बार्डर पर तैनात हैं, उन्हें दिन रात की खबर नहीं,
ऐसे देश के वीर जवान हैं उनको मेरा सलाम।

जिन्हें देश की रक्षा के आगे, घरबार की चिंता नहीं,
जिन मांओं के वह लाल हैं, उनको मेरा सलाम।

शादी-विवाह और त्योहार तक उन्हें याद नहीं हैं,
जिनको वतन से ऐसा प्यार है, उनको मेरा सलाम।

माँ-बाप, भाई-बहन और परिवार की चिंता नहीं,
जो ऐसे देश के जवान हैं, उनको मेरा सलाम।

सोशल मीडिया

श्रीश श्रीवास्तव
सहायक अधीक्षक

सोशल मीडिया आज 21वीं शताब्दी के लिए महत्वपूर्ण अंग है जिसे दुनिया में एक अरब से भी अधिक लोगों द्वारा उपयोग में लाया जाता है। हमारे दैनिक कार्यों में भी सोशल मीडिया बहुत उपयोगी एवं प्रभावशाली है। सोशल मीडिया के घटक समय अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं जिसमें वर्तमान में निम्नलिखित प्रमुख तौर पर प्रचलित हैं।

- व्हाट्सएप (WHATSAPP)
- फेसबुक
- इंस्टाग्राम
- X प्लेटफार्म (पूर्व में ट्विटर)

सोशल मीडिया की पूरी प्रक्रिया प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है। आज के समय में सरकारी कार्यालय में सोशल मीडिया का प्रयोग अत्यंत लाभकारी है। उदाहरण के तौर पर हम फेसबुक, X प्लेटफार्म के ज़रिए महत्वपूर्ण सूचनाएं आम जनता तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। इसके अतिरिक्त हम सरकार की विभिन्न प्रमुख योजनाएं इस पर प्रकाशित कर सकते हैं। जागरूकता फैलाने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर उपयोगी है। लोग रोजमर्रा की विभिन्न सूचनाएं इसके माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं । वर्तमान में आम नागरिक अपनी विभिन्न समस्याओं को सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सकते हैं जो कि संबंधित विभाग के उच्च अधिकारियों तक आसानी से पहुंच जाती हैं। कुछ समय पूर्व तक अपनी समस्याओं के समाधान हेतु बहुत चक्कर लगाने होते थे। सोशल मीडिया उन आम नागरिकों की आवाज़ बन कर उभरा है जो समाज की मुख्य धारा से अलग है व जिनकी आवाज़ को दबाया जाता है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव भी हैं। यदि इनका आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है एवं हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है। आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है। कई लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश में रहते हैं जिन्हें आसानी से फंसाया जा सके। विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचनाओं का प्रसार कुछ प्रमुख उभरते जोखिमों में से एक है। यकीनन यह न केवल देश की प्रगति में रुकावट है बल्कि भविष्य में इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आ सकते हैं। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को नया आयाम दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए हमें सोशल मीडिया के सही उपयोग के लिए समाज को जागरूक करना होगा।

डरते डरते

खीम सिंह
सहायक अधीक्षक

हम कर्मी हैं केंद्र के, हम कर्मी हैं पासपोर्ट के,
पर हम काम करते हैं डरते डरते,
मैं रोज उड़ाता हूं दो सौ लोगों को, पर डरते डरते।।

हर किसी से मिलता हूं, काम करता हूं डरते डरते
कौन कैसा है, मैं क्या जानूं,
पर मुझे तो फाइल करनी है, डरते डरते।।

कागज देखता हूं, फोटो देखता हूं, पर डरते डरते,
बुलाता हूं, आवेदक को बड़े प्यार से,
पर बात करता हूं, डरते डरते।।

फाइल देखता हूं पर पूछता डरते डरते,
आवेदक हैं पर्दा नशीं, है चेहरा भी देखना,
पर चेहरा दिखाने को कहता हूं, डरते डरते।।

वो पासपोर्ट लेके चला जाता है उस पार,
पर मैं जीता हूं, दस साल डरते डरते।।

आता है फरमान, करनी है फाइल दो सौ,
मै उसे स्वीकार करता हूं, डरते डरते।।

पासपोर्ट बन गया चला गया आवेदक ,
आती इंक्वारी, तो मैं जीता हूं मरते मरते।।

बी.ओ. भी करता है, जी.ओ. भी करता है,
हर पासपोर्ट कर्मी, डरते डरते।।

हर व्यक्ति ऑफिस जाता है, बन ठन के,
पर हम ऑफिस भी जाते हैं, डरते डरते।।

सुबह सीधे हो कर आते हैं,
शाम को झुक कर जाते हैं, काम करते करते।।

लालच में आकर, इनसेंटिव के चक्कर में,
फाइल भी ज़्यादा कर देता हूँ
पर दोस्तों मैं डरते डरते।।

सुबह पेपर में समाचार पढ़ता हूं ऑफिस की,
ऑफिस जाने को मन करता है, डरते डरते।।

हम कर्मी हैं केंद्र के, हम कर्मी हैं पासपोर्ट के,
पर हम काम करते हैं, डरते डरते।

कुछ सरल लिखा जाए

सुमित कश्यप
एस.टी.सी

सब समझें इतना सरल लिखा जाए,
ज़िंदगी का अर्थ असल लिखा जाए।

जिससे पोछा माँ ने पसीना माथे का,
मेरे परिचय में वो आंचल लिखा जाए।

देख कर पिता के चेहरे की ख़ामोशी,
रात का हिस्सा बाकी लिखा जाए।

जिधर जाने से तबाह हो जाएं नस्लें,
उस रास्ते पर दल-दल लिखा जाए।

बह गया जिनकी आंखों का काजल,
उनके अश्कों को काजल लिखा जाए।

ख़ाली छूटे पन्नों पर एक कहानी लिखी जाए,
कैसी थी तुम, क्या थी तुम, एक निशानी लिखी जाए।

जो रहे हमेशा साथ मेरे,
उन्हें मेरी दिल की धड़कन,
जो छोड़ गए साथ मेरा,
उन्हें मेरी जान लिखा जाए।

पवित्रता के अंतिम स्तर में,
गंगा का नाम लिखा जाए।

परीक्षा के अंकों को नहीं,
मेरी मेहनत को ही मेरा परिणाम लिखा जाए।

ये जो कुटिया है जैसी भी मेरी,
उसे ही मेरा महल लिखा जाए।।

सब समझें इतना सरल लिखा जाए,
ज़िन्दगी का अर्थ असल लिखा जाए।।

मिट्टी और पानी जीवन का एक स्रोत

सिद्धार्थ प्रताप सिंह
डी.ई.ओ

हमारे जीवन का सृजन भी मृदा से है और संहार भी मृदा से। यह जानते हुए भी हम अपने जीवन में इसका कोई महत्व नहीं समझते बल्कि दिन-प्रतिदिन इसे हानि पहुँचाते हैं। मिट्टी वह जगह है जो अनगिनत जीवों का घर है, उन पनपते जीवों के कारण ही मिट्टी में सब कुछ पैदा होता है। जिन्हें हम अपने कुछ फायदे के लिए उन्हें उनके घर (मिट्टी) में ही मार देते हैं। विचार कीजिए यदि आपके साथ ऐसा हो तो जीवन कैसा होगा। पश्चिमी देशों के अधिकतर हिस्से में हमने अलग-अलग तरह के लाभ दायक काम करने वाली ऐसी कई प्रजातियों को इस तरह नष्ट कर दिया है कि हम लगभग उस मुकाम पर खड़े हैं जहाँ से हम उन्हें वापस नहीं ला पायेंगे। वह दिन अब दूर नहीं कि जब हमें अपनी तरह हमारी मिट्टी का भी इलाज करवाना होगा।

मिट्टी के 12 से 15 इंच की ऊपरी सतह से ही दुनिया के 87% प्राणियों का जीवन चलता है, जिसमें हम सब शामिल हैं। आज हम ऐसी मशीनों का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो लगभग 14 इंच गहराई तक जुताई कर रही हैं और कड़ी धूप में खुला छोड़ रही हैं, यह हमारे लिए धूप में चमड़ी उधेड़कर खड़े होने जैसा है। सामूहिक विनाश का सबसे बड़ा कारण भूख, कुपोषण और स्वस्थ पर्यावरण की कमी है। दुनिया में 12-15 लोग हर मिनट भूख से मर जाते हैं। आपने डायनासोर और डोडो के विनाश के बारे में सुना होगा लेकिन अब हम मिट्टी के विनाश की बातें कर रहे हैं और ऐसा पहले भी हो चुका है 'माया सभ्यता' जैसी सभ्यताएँ मिट्टी के खराब होने से ही बर्बाद हुई हैं।

इस बढ़ती जनसंख्या को देखकर तो यह बिल्कुल नहीं लगता है कि हम मिट्टी को पहले जैसा बना पायेंगे, क्योंकि यहाँ नागरिक मुद्दों को पर्यावरण के मुद्दे बताकर छोड़ दिया जाता है, आज अगर हमारे चारों तरफ प्लास्टिक की थैलियाँ मौजूद हैं तो यह पर्यावरण नहीं बल्कि एक नागरिक मुद्दा है। संयुक्त राष्ट्र के वैज्ञानिकों के पास ऐसे कई सबूत हैं जिसमें उन्होंने कहा है, कि 50-60 सालों में मिट्टी पूरी तरह से बर्बाद हो जायेगी, क्योंकि पिछले कुछ सालों में 80% बायोमास कीड़े मिट्टी से समाप्त हो चुके हैं। भारत तथा अन्य देशों में भूमि प्रतिवर्ष 1%-3% नष्ट होती जा रही है। विचार कीजिए 50-60 वर्षो बाद जब खेती करने योग्य भूमि ही नहीं रहेगी तब जीवन कितना मुश्किल होगा जबकि भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है। हम जिस ख़तरे का सामना कर रहे हैं उसमें सबसे ज़रूरी है बायोडाइवर्सिटी को ज़िन्दा रखना और व्यक्तिगत तौर पर हर इन्सान को जागरुक होना होगा क्योंकि समाज के सामने तो हम पर्यावरण को स्वच्छ बनाने की कसमें खाते हैं और उस समाज के पीछे हम पॉलीथीन का प्रयोग करते हैं, खेतों में भूमि तथा लाभदायक जीवाणुओं को हानि पहुँचाने वाली खाद एवं उर्वरक का इस्तेमाल करते हैं। जिस दिन हम व्यक्तिगत रुप से जागरुक हो जाऐंगे, पर्यावरण के मुद्दे चुनावी मुद्दे बन जायेंगे तथा जब राजनीतिक दल अपने घोषणापत्र में पर्यावरण के मुद्दों को महत्व देना प्रारम्भ कर देंगे तब हमारे पर्यावरण में स्वत: ही सुधार होने लगेंगे।

अभिनव सिंह
एस. टी. सी.

मैं अक्सर रो देता हूँ

यूँ तो सारी दुनिया के ग़म, मैं हँस कर सह लेता हूँ,
आती है जब याद आपकी, मैं अक्सर रो देता हूँ ।

होता है अहसास हमेशा, आप यहाँ ही हो जैसे,
काश ये मुमकिन हो जाए, मगर यह मुमकिन हो कैसे।

''पापा'' आपसे मुझको हरपल रहता है यह गिला,
7 वर्ष तक ही क्यों, मुझे आपका साथ मिला।

बस इसी बात पर क्षणिक समय भर मैं गुस्सा कर लेता हूँ,
आती है जब याद आपकी, मैं अकसर रो देता हूँ।

साथ आप थे तब लगता था, ये सारा संसार मिला,
ऐसा लगता जैसे मुझको अति सुन्दर परिवार मिला।

वक्त को ये मंजूर कहाँ था, ये सुन्दर परिवार भला,
एक हवा का झोंका आया, और तू मुझसे दूर चला।

एक बड़े से घर में तन्हा, अब अक्सर रह लेता हूँ,
आती है जब याद आपकी, मैं अक्सर रो देता हूँ।

आप नहीं हो फिर भी माँ से आपके जैसा प्यार मिला,
दादा-दादी, चाचा, ताऊ, सबका बहुत दुलार मिला।

भाई-बहनों का भी मुझको, प्यार और विश्वास मिला,
आप हमारी जान थे पापा, मन ही मन कह लेता हूँ।

आपके आदर्शों पर चलकर आप को ही जी लेता हूँ,
आती है जब आपकी याद, मैं अक्सर रो लेता हूँ।

कौशल सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

धरती माँ का ऋण

प्रणाम करो इस धरती को
जो जग की भाग्य विधाता है।
हो मानव या कोई जीव-जन्तु,
वो जीवन इससे ही पाता है।।

हैं असंख्य मानव धरती पर,
पर उनका भोजन कहाँ से आता है?
खाते हैं कहाँ से लोग सारे,
उनका जीवन कैसे चल पाता है?

बोता किसान एक दाना धरती में,
वो सौ गुना हो जाता है।
तब जाकर दुनियां में लोगों का,
पेट कहीं भर पाता है।।

है भण्डार हर पदार्थ का धरती पर,
प्रयोग में जो भी आता है।
पर ये भी सच है कि इस धरती से,
लेकर न कोई, कुछ जा पाता है।।

है धरती माँ का यह ऋण हम सब पर,
चुका न कोई जिसे पाता है।
माँ तो आखिर माँ ही होती है
उसे तो बस प्यार लुटाना आता है।
प्रणाम करो इस धरती को,
जो जग की भाग्य विधाता है।।

धैर्य की शक्ति

भूमिका पाल
पुत्री श्री कौशल सिंह

समय और परिस्थितियाँ हमेशा एक जैसी नहीं रहतीं। हर मनुष्य के जीवन में कभी अच्छा तो कभी बुरा समय आता है, लेकिन हर व्यक्ति की पहचान उसके बुरे समय में ही होती है क्योंकि अच्छे समय में तो हर व्यक्ति सही फैसला लेने में सक्षम होता है पर बुरे समय में कोई भी सही फैसला लेने के लिए व्यक्ति की मानसिक स्थिति मजबूत होनी आवश्यक है।

प्रतिकूल समय में सही फैसला लेने वाला व्यक्ति ही सफलता पाता है और जो व्यक्ति ऐसे समय में खुद को नहीं संभाल पाता है वह असफल हो जाता है। बुरे समय में सही फैसला लेने के लिए आपको सबसे पहले किस गुण की आवश्यकता है? कठिन परिस्थितियों में इंसान को किसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है?

अगर गंभीरता से सोचा जाए तो बुरे समय में सबसे पहले व्यक्ति के अंदर घबराहट होने लगती है और उसके मन में अजीब से ख्याल आना शुरू हो जाते हैं और उसकी सही फैसला लेने की मानसिक क्षमता दुर्बल पड़ जाती है और उसका धैर्य जवाब देने लगता है और ऐसी स्थिति में व्यक्ति जो भी फैसला लेता है उसमें से ज्यादातर गलत ही साबित होते हैं। इसलिए सबसे जरूरी है बुरे समय में धैर्य बनाए रखना। क्योंकि धैर्य से कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है। जो व्यक्ति धैर्य से काम नहीं लेता है वह छोटी से छोटी समस्या का भी सामना सही तरह से नहीं कर पाता है। उदाहरण के लिए आप अपने आस-पास घटी अनेकों घटनाओं से सीख ले सकते हैं जिनमें ज्यादातर घटनाऐं व्यक्ति में धैर्य की कमी से होती है। जैसे अगर कोई व्यक्ति आपको किसी काम के लिए उकसाता है और आप उसके उकसावे में आकर गलत निर्णय ले लेते हैं तो यह आपकी कमजोरी दर्शाता है। ऐसे में धैर्यशील व्यक्ति पहले उकसावे को समझने की कोशिश करता है, थोड़ा ठहरता है, और फिर फैसला लेता है।

केवल धैर्य ही आपको पूरी मानसिक क्षमता का उपयोग करने लायक बनाता है, जिससे आप कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लायक बन जाते हैं। धैर्य रखने का मतलब स्वभाव को शांत रखने से है। जब आप शांत होकर फैसला लेते हैं और अपने अंदर घबराहट नहीं होने देते हैं तो आप उस समय इतने मजबूत हो जाते हैं कि किसी भी कठिनाई का आसानी से सामना कर सकते हैं।

सीखना

श्रेय कृष्ण सक्सेना
डी.ई.ओ.

प्राणी जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है बच्चा सबसे पहले अपने परिवार के व्यवहार को देखता है, वैसा ही स्वंय करना चाहता है इस प्रकार धीरे-धीरे वह वांछित व्यवहार सीख लेता है।

अपने जीवन को प्रगतिशील बनाने के लिए व्यक्ति समाज से सीखना प्रारम्भ कर देता है। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है। मनुष्य को कभी भी अपने जीवन में सीखना नहीं भूलना चाहिए बल्कि जीवन की हर श्रेणी में सीख लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

नीतू वर्मा
पुत्री श्री हरीश कुमार

काश, हम कभी बड़े न होते

काश, हम कभी बड़े न होते,
ममता के आंचल में ही छुपे रहते।

यह ज़िम्मेदारियों का बोझ,
यह जीवन की परेशानियाँ।

ज़िंदगी में दर-बदर भटकना,
सब कुछ पाना और पाकर खो देना।

दो पल का भी सुकून नहीं रह गया,
समय के चक्र में सब कुछ छिन गया।

काश, हम कभी बड़े न होते,
सुबह हुई, रात हुई, यही क्रम चलता रहा।

अपनी मसरूफियत में इतना खो गए,
न वक्त का पता चला न उम्र का।

आईने ने हमकों लकीरें दिखा दिया,
हर क्षण एक नई पहेली है ।।

कहीं कुआं तो कहीं खाई है,
कुछ खट्टा, कुछ मीठा सा जीवन है।

यही जीवन की सच्चाई है,
काश, हम कभी बड़े न होते।।

मनीष शर्मा
एम.टी.एस

हिन्दी का उत्थान

हिंदी का अपनापन ही तो लेकर आया है,
पासपोर्ट कार्यालय आज हम सबको भाया है।

सम्मेलन में आने का जो किया आग्रह था,
मनीष जी आप चले आना आपका भी आग्रह था।

इतने अच्छे मानव का आभार व्यक्त करता हूँ,
जीवन में कुछ बने प्रभु से सदा विनय करता हूँ।

जिनके पिता सुशील, सदाचारी बन जीते थे,
जो भी थे सिद्धांत लिए बस जीवन जीते थे।

आज मंच से सबको ही, कुछ यहाँ बताना है,
हिंदी का उत्थान हो सके, सब को समझाना है।

जो कुछ लिखना पढ़ना, सब बस हिंदी में ही हो,
हो प्रचार-प्रसार सभी कुछ, हिंदी में ही हो।

मंच आज का धन्य, धन्य हिंदी अपनाने को,
सबको ही बुलवाया, सबका मान बढ़ाने को।

आज यहाँ जो भी आए हैं, सब का वंदन करता हूँ,
मंचासीन सभी लोगों का, मैं अभिनंदन करता हूँ।

राम मंदिर निर्माण की संघर्ष गाथा

दिनेश चन्द्र
आई.टी. इन्चार्ज, टी.सी.एस.

हम लोग उस काल खंड के साक्षी बने हैं जिसने विनाश और दिव्य स्वप्न को पूरा होते हुए देखा है। हम लोगों ने उस भीषण कोरोना के दौर (मार्च 2020 अक्टूबर 2021) को भी देखा है जिसने चारों तरफ विनाश लीला को फैला दिया था। कोई बुरे स्वप्न को याद रखना नहीं चाहता है। कोरोना काल खंड एक दु:स्वप्न की तरह था।

श्री राम मंदिर जन्म भूमि मुक्त होकर भगवान श्री राम मंदिर निर्माण के स्वप्न को पूरा होते हुए हमने इसी काल खंड में देखा है। प्रत्येक भारतीय ने इस दिव्य सपने को देखा है और जिया है। राम मंदिर निर्माण के संघर्ष की लम्बी कहानी को सिलसिलेवार दर्शाने की कोशिश कर रहा हूँ:-

❖ मुगल साम्राज्य के प्रथम शासक जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने 1527 में अपने सेनापति मीर को अयोध्या के राम मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया। राम मंदिर तोड़ने के लिए बाबर ने हिन्दुओं का जमकर कत्ले-ए-आम किया। करीब 1 लाख 75 हजार हिन्दुओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी लेकिन अपने आराध्य श्री राम के मंदिर को बचा न सके।

❖ आराध्य श्री राम के मंदिर को नेस्तनाबूत करने के बाद जलालशाह ने हिन्दुओं के रक्त से खून का गारा बनाकर लखौरी ईटों से बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया।

❖ हंसवर रियासत के राजा रणविजय सिंह जी ने अपने कुलपुरोहित देवदीन पांडेय के साथ मिलकर श्री राम जन्मभूमि को मुक्त करवाने के लिए 70 हजार सैनिक लेकर मुगलों के साथ संघर्ष किया लेकिन सभी सैनिक, देवदीन पांडेय और राजा रणविजय सिंह जी वीरगति को प्राप्त हो गए।

❖ हंसवर रियासत की महारानी जयराज कुमारी ने श्री राम जन्मभूमि को मुक्त करने का बीड़ा उठाया। रानी ने स्वामी महेश्वरनंद जी के साथ मिलकर मुगलों की सेना से 3 वर्षों तक युद्ध किया लेकिन अंत में वीरगति को प्राप्त हो गई।

❖ महारानी जयराज कुमारी जी के बलिदान के बाद स्वामी महेश्वरनंद जी ने मुगलों के साथ राम जन्मभूमि को मुक्त करवाने का संघर्ष जारी रखा। स्वामी जी ने साधु संतों, नागा बाबाओं, मठों मंदिरों के महंतों के साथ मिलकर मुगलों के खिलाफ शस्त्र उठाकर संघर्ष किया।

❖ हुमायूँ के काल में तमाम अमर बलिदानिओं और स्वामी महेश्वरनंद जी के संघर्ष के फलस्वरूप 10 वें युद्ध में मुगलों से सफलता मिली और राम जन्म भूमि 2-3 वर्षो तक मुगलों से मुक्त रही।

❖ अकबर के शासन काल में श्री राम जन्म भूमि पर एक छोटा मंदिर बनाने की अनुमति दे दी गयी और 90 वर्षो तक लगातार पूजा पाठ जारी रहा।

❖ औरंगजेब ने अकबर के शासन काल में बनाये गए छोटे से मंदिर को तोड़ दिया और उसको एक टीले में तव्दील कर दिया। लेकिन हिन्दुओं नें अपने आराध्य श्री राम की पूजा कष्टों को झेलते हुए उसी टीले पर लगातार जारी रखी।

❖ श्री राम मंदिर निर्माण के लिए करीब **68 धर्म** युद्ध लड़े गए जिसमें करीब **4 लाख** से ज्यादा हिन्दू बलिदानियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया।

❖ आजादी के बाद श्री राम जन्म भूमि को मुक्त करवाकर श्री राम मंदिर बनाने का आंदोलन चला जिसका नाम राम मंदिर आंदोलन रखा गया। राम मंदिर आंदोलन के मुख्य संचालन कर्ता अशोक सिंघल, लाल कृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी कल्याण सिंह, विनय कटियार, साध्वी ऋतंभरा, उमा भारती, प्रवीण तोगड़िया और विष्णु हरि डालमिया आदि गणमान्य व्यक्ति रहें।

❖ 30 अक्टूबर 1990 को तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व0 मुलायम सिंह यादव ने कार सेवकों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दिया था।

❖ श्री राम मंदिर निर्माण की कानूनी लड़ाई 30 सितम्बर 2010 से शुरू हुई। सितम्बर 2010 में माननीय हाई कोर्ट, प्रयागराज से पहला फैसला आया। उसके बाद एक लम्बी और बोझिल कानूनी कार्यवाही शुरु हुई।

❖ एक लम्बी और बोझिल कानूनी लड़ाई लड़ते–लड़ते मामला माननीय सुप्रीम कोर्ट गया। माननीय सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की बेंच ने 9 नवंबर 2019 को सर्वसम्मति से अपना फैसला सुनाया और श्री राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हो गया।

❖ 5 अगस्त 2020 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने श्री राम मंदिर के निर्माण की नींव रख दी।

❖ 500 वर्षो से ज्यादा के लम्बे संघर्ष के बाद 22 जनवरी 2024 को भव्य राम मंदिर में भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा पूरी विधि विधान और भव्य उद्घाटन के साथ भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कर कमलों द्वारा की गई।

अयोध्या में श्री राम मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है। श्री राम मंदिर के उद्घाटन में सभी धर्मो के लोगों ने बढ़ –चढ़कर हिस्सा लिया। सभी भारतीयों को दिव्य राम मंदिर के दर्शन करके अपने जीवन को सफल बनाना चहिए।

बाकी है

तीन पहर तो बीत गये, बस एक पहर ही बाकी है,
जीवन हाथों से फिसल गया, बस खाली मुट्ठी बाकी है,
सब कुछ पाया इस जीवन में, फिर भी इच्छाएं बाकी हैं।

दुनिया से हमने क्या पाया, यह लेखा जोखा बहुत हुआ,
इस जग ने हमसे क्या पाया, बस यह गणनाएं बाकी हैं।
इस भाग दौड़ की दुनिया में, हमको एक पल का होश नहीं,
वैसे तो जीवन सुखमय है, फिर भी क्यों संतोष नहीं।

क्या यूं ही जीवन बीतेगा, क्या यूं ही सांस बंद होगी,
औरों की पीड़ा देख समझ, कब अपनी आंखें नम होंगी।
मन के अन्तर में कहीं छिपे, इस प्रश्न का उत्तर बाकी है,
मेरी खुशियां, मेरे सपने, मेरे बच्चे मेरे अपने,
यह करते–करते, शाम हुई।

इससे पहले तम छा जाये,
इससे पहले की शाम ढले, कुछ दूर पराई बस्ती में।
इक दीप जलाना बाकी है,
तीन पहर तो बीत गये, बस एक पहर ही बाकी है,
जीवन हाथों से फिसल गया, बस खाली मुट्ठी बाकी है।

गौरी श्याम सक्सेना
वरिष्ठ पासपोर्ट साहयक

विनय चंद्र
सहायक अधीक्षक

माँ-बाप

माँ-बाप की उम्मीद भरी आँखों के सफर पर जो निकला,
तो खुद पसंद गलियों की तरफ कभी नहीं लौटा,
हाँ मगर, मैं बन गया एक अच्छा बेटा, एक अच्छा भाई।

करते हुए अच्छी जॉब, हुई जब मेरी सगाई,
तो भूल गया कॉलेज की, वो साँवली परछाई।

अब तक अटका है, वो धुंधला सा पल,
मगर भूल कर बीता हुआ कल,

उमंगों को दबाए हुए, मैं आज में जीता हूँ,
कभी किसी से कह नहीं पाया, भीतर से कितना रोता हूँ।

रोज सुबह अलार्म घड़ी से जाग कर हड़बड़ी में,
ज़िम्मेदारियों का बैग उठा कर जो निकलता हूँ,
तो शाम तक कदम घर नहीं लौटते,
कभी-कभी रास्ते रात भी कर देते हैं।

मगर गली के नुक्कड़ से ही देखकर घर का उजीता,
मैं आदतन खोलने लगता हूँ जूतों का फीता,
टाई ढीली करते-करते बैग पर पकड़ ढीली पड़ जाती है।

अपने आप मैं हरगिज़ देखना नहीं चाहता,
उँगलियों पर पड़ी हैंडिंल की छाप।

नशे की तरह हावी थकान से चूर भीतर घुसता हूँ,
तो वो फिर नाराज मिलती है,
समझ नहीं पाता इतना सही होने पर भी,
मेरी क्या गलती है।

मैं नजर अंदाज करता हूँ वो तेवर चढ़ा,
नहीं चाहता शुरू हो फिर वही झगड़ा,
बदल कर मूड, बच्चों के फूल सरीखे चेहरों में,
थकान ऑफिस की भूल जाता हूँ,
इसी बोरिंग रूटीन को रोज निभाता हूँ।

यूँही ढूँढ लेता हूँ, कोई न कोई जीने का बहाना,
क्योंकि कल सुबह फिर मुझे काम पर है जाना।

उम्र पर झरीटें पड़ गयीं मगर,
घर को सोचे बगैर एक पल नहीं बीता।

मैं पिता हूँ, जो अपने लिए कभी नहीं जीता,
कभी नहीं जीता, कभी नहीं जीता।

सूर्य है मेवाड़ का

संदीप सिंह
डी.ई.ओ.

अखंड है, प्रचण्ड है, स्वयं का मानदंड है, शूरवीर, कर्मवीर, खुद में कालखण्ड है, जो सूर्य है मेवाड़ का, सिंह सा दहाड़ता, जंगलों में जो जिया, वो खुद में ही पहाड़ है। प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप जी के बुलंद एवं निष्ठावान व्यक्तित्व का प्रभाव बीते कल में शाश्वत था, आज भी है और अनंतकाल तक रहेगा।

नमन है वीरता के सूर्य को,
नमन है असीमित शौर्य को,
नमन रोम-रोम मेवाड़ को,
नमन उस सिंह की दहाड़ को,
नमन उन संघर्षो के जाप को ,
नमन है प्रताप को,
नमन है प्रताप को।।

अन्य जानकारी -

- महाराणा प्रताप जी के पास एक सबसे प्रिय घोड़ा था, जिसका नाम 'चेतक' था।
- राजपूत शिरोमणि महाराणा प्रताप उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे।
- वह तिथि धन्य है, जब मेवाड़ की शौर्य-भूमि पर मेवाड़-मुकुटमणि राणा प्रताप का जन्म हुआ।
- महाराणा प्रताप का नाम इतिहास में वीरता और प्रण के लिये अमर है।

महाराणा प्रताप के बारे में कुछ रोचक जानकारियाँ:-

- महाराणा प्रताप के भाले का वजन 80 किलोग्राम था और कवच का वजन भी 80 किलोग्राम ही था। कवच, भाला, ढाल, और हाथ में तलवार का वजन मिलाएं तो कुल वजन 207 किलो था।

- अकबर ने कहा था कि अगर राणा प्रताप मेरे सामने झुकते हैं तो आधे हिंदुस्तान के वारिस वो होंगे पर बादशाहत अकबर की ही रहेगी। लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया ।

- जब अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन भारत दौरे पर आ रहे थे, तब उन्होंने अपनी माँ से पूछा, कि हिंदुस्तान से आपके लिए क्या लेकर आएं। तब माँ का जवाब मिला- "उस महान देश की वीर भूमि हल्दी घाटी से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर आना जहाँ का राजा अपनी प्रजा के प्रति इतना वफादार था कि उसने आधे हिंदुस्तान के बदले अपनी मातृभूमि को चुना''। यद्यपि बदकिस्मती से उनका वह दौरा रद्द हो गया था ।
- हल्दी घाटी की लड़ाई में प्रताप के 20000 सैनिक थे और अकबर की ओर से 85,000 सैनिक युद्ध में सम्मिलित हुए ।

❖ महाराणा प्रताप ने जब महलों का त्याग किया तब उनके साथ लुहार जाति के हज़ारों लोगों ने भी घर छोड़ा और दिन रात राणा की फौज के लिए तलवारें बनाईं ।

❖ हल्दी घाटी के युद्ध के 300 साल बाद भी वहाँ जमीनों में तलवारें पाई गईं ।

❖ महाराणा प्रताप के देहांत पर अकबर भी रो पड़ा था ।

❖ महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक महाराणा को 26 फीट का दरिया पार कराने के बाद वीर गति को प्राप्त हुआ। उसकी एक टांग टूटने के बाद भी वह दरिया पार कर गया।

❖ मरने से पहले महाराणा प्रताप ने अपना खोया हुआ 85 % मेवाड़ फिर से जीत लिया था ।

बचपन का ज़माना

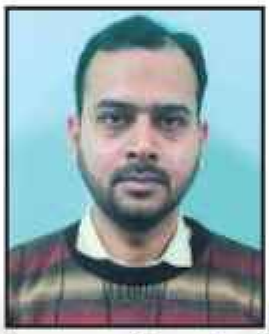

मोहम्मद आतिर अंसारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

क्या वह भी ज़माना होता था,
हर मौसम सुहाना होता था।

हर खेल में साथी होते थे,
हर रिश्ता निभाना होता था।

पापा की वह डांटें,
मम्मी का मनाना होता था।

ग़म की ज़बान न होती थी,
न ज़ख्मों का पैमाना होता था।

रोने की वजह न होती थी,
न हंसने का बहाना होता था।

बिल्कुल भी फिक्र न होती थी,
खुशियों से याराना होता था।

अब नहीं रही वह ज़िंदगी,
जैसा बचपन का ज़माना होता था।

क्या वह भी ज़माना होता था,
हर मौसम सुहाना होता था।

मेरी कार की चाभी

दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बात है 2023 की, हुआ यह कि मेरी ऑल इंडिया एलटीसी लेने की निर्धारित अवधि 31 दिसम्बर 2022 को पूरी हो गई थी, अब मेरी तीसरी ऑल इंडिया एलटीसी भी बिना कहीं गए ही समाप्त हो चुकी थी। घर में काफी दबाव का माहौल था और श्रीमती जी ने उलाहना देते हुए कहा केवल ऑफिस का काम ही करते रहिए, अरे बच्चों को कहीं घुमा भी दिया करो, लो अब तीसरी एलटीसी भी गई। हमारी तो कोई सुनता ही नहीं। ये बच्चे बड़े होकर क्या याद रखेंगें, अरे अपने खर्चे पर नहीं घुमाते हो तो कम से कम सरकारी खर्चे पर ही घुमा दिया करो।

मैंने कहा कि क्या बताएं, अब यह एलटीसी तो गई, चलो कोई बात नहीं अगला नम्बर भी जल्दी आएगा। पता नहीं हमारी बातों को कौन सुन रहा था, शायद ईश्वर मेरे ऊपर मेहरबान थे कि अचानक से भारत सरकार ने एक विशेष आदेश से 31 दिसम्बर 2022 की तारीख को बढ़ाकर 31 मार्च 2023 तक एलटीसी लाभ लेने की अनुमति दे दी। अब क्या था, अब तो कहीं जाना ही था। आपस में बात हुई, साथ ही एक हमारे मित्र हैं, ध्रुव कुमार सिंह जी जो कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय लखनऊ में कार्यरत हैं, उनसे भी चर्चा हुई और हमने "मत चूको चौहान" वाली कहावत को चरितार्थ करने की ठान ली।

अब काफी सोच विचार कर गन्तव्य स्थल का चयन किया गया। हमनें सोचा जब लाभ ले ही रहें हैं तो फिर पूरा-पूरा लाभ क्यों न लें, आस पास क्यों जाएं। जब बात ऑल इंडिया की है तो जितनी दूर हो सकता है उतनी दूर चला जाए और सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम् तक जाने की योजना बना ली गई। बच्चों की परीक्षा के मद्देनजर 30 मार्च को लखनऊ से यात्रा शुभारंभ करना नियत हुआ।

दक्षिण प्रवास 10 दिनों का था, बैंगलोर होते हुए कोचीन जाना, वहाँ से मुन्नार की पहाड़ियों के सुहावने मौसम का आनन्द लेते हुए वर्कला के रास्ते तिरुवनंतपुरम में पद्मनाभन स्वामी के दर्शन कर, कन्याकुमारी में सूर्योदय व सूर्यास्त के मनोहारी दृश्यों को मन में समेटे हुए रामेश्वरम में भोले बाबा के दर्शन करने जाना और लौटकर मदुरई में मीनाक्षी मंदिर के दर्शन करते हुए चेन्नई में वापसी की फ्लाइट पकड़ने की योजना बनी थी, जाहिर सी बात है तैयारी भी लंबी करनी पड़ी। टिकट बुकिंग, हालीडे होम्स/होटल बुकिंग्स से लेकर कपड़े आदि की खरीददारी का सारा काम हम लोगों ने पूरा किया। इस बीच पता ही नहीं चला कि कब मार्च का महीना आ गया। हम होली में व्यस्त हो गए।

और फिर वह दिन आ गया जब हम लोगों को बरेली से लखनऊ के लिए प्रस्थान करना था। वह तारीख थी 30 मार्च। हुआ यूँ था कि चैत्र नवरात्रि चल रहे थे। मेरी धर्मपत्नी मलिका पूरे 9 दिन के व्रत थीं और 30 तारीख को ही नवमी थी तो उसी दिन हवन आदि कर के सुबह 6 बजे निकलने की योजना 29 तारीख को बनाई गई। अब 30 मार्च की सुबह हम सबमें जाने की उत्सुकता थी तो हम निर्धारित समय से पहले ही सो कर उठ गए। नहा -धोकर हवन आदि संपन्न कर लगभग 6 बजे चलने के लिए तैयार थे लेकिन गृह मंत्रालय की अपनी योजना चल रही थी। उन्होंने कालोनी के घरों में प्रसाद देने का सोच रखा था और हम इस योजना से अनभिज्ञ थे। खैर प्रसाद देना तो अच्छी बात थी लेकिन समस्या यह थी कि इस प्रक्रिया में करीब 1 घण्टा लग गया, और करीब 7:10 हो गया। निकलने वाले थे तभी मलिका ने कहा कि अरे 10-11 दिनों बाद आना है, तो ऐसा करते हैं कि पूजा का जो सामान नदी में विसर्जन करना है, वह कार में रख लेते हैं, रास्ते में नकटिया नदी (बरेली में प्रवाहित होने वाली एक छोटी

से नदी) में विसर्जित कर देंगें। यह सब काम समय से करना ही ठीक रहता है । मैं अंदर से बहुत गुस्से में था, मैने कहा जो इच्छा हो कर लो और जो रखना हो रख लो लेकिन जल्दी चलो। हमें लखनऊ एअरपोर्ट पर 1:30 बजे तक पहुँचना है और उससे पहले तुम्हारे घर जाकर वहाँ गाड़ी आदि खड़ी करनी है, देर पहले ही हो चुकी है जल्दी करो। खैर हम लोग 7:20 पर घर से लखनऊ के लिए निकले।

नकटिया नदी घर से मात्र 10 मिनट की दूरी पर थी, जहाँ हमें सामग्री विसर्जित करनी थी, मैं गुस्से में था और मलिका डर की वजह से नहीं बोली और नकटिया नदी पार हो गई। वह सामग्री गाड़ी में ही रखी रह गई। बच्चे सो चुके थे और हम दोनों के बीच शीतयद्ध जैसा माहौल था। करीब 1-1:30 घंटे बीत गया। खैर सफर लंबा था, समझौता तो होना ही था। धीरे-धीरे बर्फ पिघली और युद्ध विराम लागू हो गया। फिर हम और हमारी बातें आगे बढ़ती गईं। रास्ते में शाहजहांपुर में भी एक नदी पड़ती है। हम बातों में उसको भी भूल गए। फिर यह तय हुआ कि सीतापुर के पहले पड़ने वाली नदी में जरूर विसर्जित कर देंगे। जब सीतापुर वाली नदी पर पहुंचे तो वहाँ बहुत जाम लगा था तो हमने कहा कोई बात नहीं लखनऊ में गोमती नदी तो है ही वहाँ विसर्जित कर देंगे।

12 बजे से थोड़ा पहले ही हम लखनऊ पहुँच गए और अब हम सब खुश थे कि समय से लखनऊ पहुंच गए और इसी बीच ध्रुव जी का भी फोन आ गया कि वह लोग 12:30 बजे तक एअरपोर्ट पहुंच जाएंगे, हमने कहा आप पहुँचिए हम लोग भी 1:30 बजे तक पहुंच जाएंगे। इसी बीच गोमती नदी आ गई, मैं ड्राइव कर रहा था और मलिका बगल वाली सीट पर बैठी थीं, उन्हीं के पास सामग्री रखी थी और उन्हीं को विसर्जित भी करनी थी, तो वह कार से सामग्री लेकर उतरीं लेकिन नदी के पुल पर बैरिकेडिंग दूर से थी तो उनको लगा कि उतनी दूर से उनसे सामग्री विसर्जित नहीं हो पाएगी। दूसरी ओर लंबी दूरी से बिना रुके गाड़ी चलाने की वजह से हाथ पैरों को सीधा करने के उद्देश्य से मैं भी बाहर आ गया था। तभी अचानक मलिका ने कहा कि अरे जरा आप ही इस सामग्री को विसर्जित कर दीजिए चूँकि समय से गंतव्य तक पहुँच जाने की खुशी मेरे मन में थी तो मैंने उनसे सामग्री ली और बैरिकेडिंग को ध्यान में रखते हुए दोनों हाथों से जोर से सामग्री को नदी में विसर्जित करने के उद्देश्य से फेंका।

जैसे ही सामग्री नदी की ओर जाती हुई दिखी तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरे दाएँ हाँथ की तर्जनी में छल्ले के साथ फंसी हुई कार की चाभी भी सामग्री के साथ उड़ती हुई नदी में जा रही है। अब हम पति-पत्नी हक्के बक्के। कार की चाभी गोमती में समा चुकी थी। हम दोंनो के हाथ इस विस्मय में अपने -अपने चेहरे पर। अब क्या करें! एक तो हमारी पहली लंबी यात्रा खटाई में पड़ती दिख रही थी साथ ही ध्रुव जी की भी, क्योंकि सारे टिकट मेरे ही पास थे। खैर, तभी हमें नीचे नदी में सिक्के ढूंढते हुए कुछ लोग दिखाई दिए, हमने उनसे अनुनय विनय किया, कि भईया कार की चाभी ढूंढ दीजिए। उन्होंने 5 मिनट कोशिश की और फिर असमर्थता व्यक्त करते हुए चलते बने।

तब मैने इंश्योरेन्स वालों को फोन किया, उन्होंने कहा कि हो तो जाएगा लेकिन आपके इंश्योरेन्स के हिसाब से गाड़ी आपको हमारे सेंटर तक लानी होगी और नई चाभी बनने में भी शायद एक दिन लगे। इसी बीच मलिका ने अपने भाइयों को फोन लगा दिया था। उन्होंने हमसे फोन पर कहा जीजा जी चिंता मत करिए, मुस्कुराइए कि आप लखनऊ में हैं। आप हमारे लखनऊ में हैं कुछ भी करके आपकी यात्रा जरुर करवाएंगे। फिर बड़े वाले साले ने आकर अपनी गाड़ी से हमें अपने घर तक और वहाँ से एयरपोर्ट तक पहुँचाया, तब तक छोटेवाले साले ने एक मैकेनिक से चाभी बनवाने का काम भी शुरू कर दिया और हम लोग समय से फ्लाइट पकड़ पाए और खास बात यह थी कि हवाई जहाज के उड़ान भरने से पहले नई चाभी बन चुकी थी। तो यह थी मेरी कार की चाभी की कहानी।

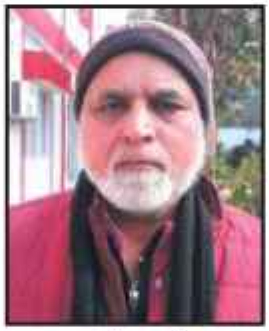

अलीम हुसैन
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

गज़ल

सुबह आता हूँ और शाम को चला जाता हूँ
किसी मजबूर का मैं दिल नहीं दुखाता हूँ।

ऑफिस देता है मुझे मेरे काम की तंख्वाह
उसी तंख्वाह से मैं परिवार को चलाता हूँ।

यहां सबका हम दर्द है बनना हमारा पेशा
अपने फर्ज़ को मैं ज़िम्मेदारी से निभाता हूँ।

यहां ख़ुदगर्ज़ कम, मजबूर बहुत आते हैं
हर एक मजबूर के, मैं दिल में घर बनाता हूँ।

जहां भी जाता हूँ, वहां लोग पसंद करते है
किसी मजबूर का, मैं दिल नहीं दुखाता हूँ।

ख़ुश होकर कहते हैं लोग घर आना भाई
हां तो कर देता सबसे, मगर घर नहीं जाता हूँ।

मेरे परिवार ने जो संस्कार दिये हैं मुझको
अपने परिवार के मैं संस्कार को निभाता हूँ।

किसी मजबूर की कभी बददुआ मत लेना
यही संस्कार अपने परिवार को पढ़ाता हूँ।

चंद दिन की ज़िंदगी है हंसते हंसते काट लो
दिल किसी का मत दुखाना बस यही बताता हूँ।

अनुराग दुबे 'अंशुल'
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

रिश्ते

मिलते हैं, बिछड़ते हैं, नये रिश्ते भी बनते हैं,
पुष्प नए खिलते हैं और नये शूल भी बनते हैं।

सदियों से घड़ी की सुइयाँ, समय यही दिखलाती हैं।
लोग बिछड़ते जाते हैं, पर यादें साथ निभाती हैं।

दिल के किसी कोने में, हर शख्स जगह बनाता है,
मन की गहराइयों में, कहीं न कहीं रह जाता है।

बीते दिन और गुजरी रातें, हमको याद दिलाती हैं,
लोग बिछड़ते जाते हैं, पर यादें साथ निभाती हैं।

बरखा आई, पंछी आए, फिर बादल ने गान किया,
फिर सूखी धरती ने जैसे, बूंदों का अमृत पान किया।

पतझड़, सावन, सर्दी, गर्मी, ये एहसास कराती हैं,
लोग बिछड़ते जाते हैं, पर यादें साथ निभाती हैं।

इसका जाना, उसका आना, हर दिन खोना, हर दिन पाना,
दिल से रोकर मन बहलाना, ठोकर खाकर फिर उठ जाना।

सूनी आंखें, भीगी पलकें, मौन स्वर में गाती हैं,
लोग बिछड़ते जाते हैं, पर यादें साथ निभाती हैं।

स्वास्थ्य का रहस्य

मोनिका शुक्ला
पत्नी श्री संदीप शुक्ला

बहुत समय पहले की बात है एक गांव में हरिशंकर नाम का एक वृद्ध व्यक्ति रहता था। उसकी उम्र लगभग 80 वर्ष थी किंतु वह अपनी से आधी उम्र का लगता था और युवाओं की तरह हर कार्य में सक्षम था। सभी उससे उसके स्वास्थ्य का रहस्य पूछते पर वह किसी को कुछ नहीं बताता था। धीरे-धीरे लोग गांव के मुखिया के पास पहुंचे, मुखिया ने उसे बुलाया और पूछा कि तुम इतनी उम्र में भी इतने स्वस्थ कैसे हो ? वृद्ध ने मौन व्रत धारण कर रखा और कुछ ना बताया, तब मुखिया ने अपने आदमी उसके पीछे लगा दिए। वह सभी भेष बदलकर वृद्ध पर नजर रखने लगे और उसका पीछा करते हुए उन्होंने देखा कि वह वृद्ध रोज सुबह अपने घर से 15 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर चढ़ता और वहाँ पहुंच कर चुपचाप कुछ खाता है। मुखिया ने अपने आदमियों के साथ पहाड़ी पर चढ़कर देखा कि पहाड़ी पर साधारण सा एक पेड़ था जिस पर छोटे-छोटे फल लगे थे, और वह रोज़ उस पेड़ के फलों को तोड़कर खाता था। अब तो सबको और उत्सुकता हुई कि साधारण से फल से इतना सेहतमंद कैसे रहा जा सकता है। मुखिया ने वृद्ध को बुलाया और उससे पूछा कि इतने साधारण से फल खाकर तुम कैसे स्वस्थ हो ? वृद्ध बोला उस वृक्ष पर हर मौसम में फल आते हैं। और आप सबके लिए वह साधारण सा फल होगा, किंतु मेरे लिए यह मेरी मेहनत का फल है, इसे पाने के लिए मैं रोजाना 15 किलोमीटर पैदल चलकर जाता हूँ, इससे मेरे शरीर की अच्छी वर्जिश हो जाती है। और उस पर सुबह की ताजी-ताजी हवा व शुद्ध वातावरण, मेरे शरीर के लिए जड़ी बूटियों का काम करते हैं। इसी से सेहत अच्छी रहती है। अब सभी स्वास्थ्य का रहस्य समझ चुके थे। मुखिया ने सभी को शारीरिक श्रम करने की सलाह दी और इसका महत्व समझाया।

आज की टेक्नोलॉजी ने हमारी जिंदगी को काफी आसान बना दिया है। मसाला पीसने के लिए मिक्सी है, सिलबट्टे का इस्तेमाल बंद हो गया है। आटा गूँथने एवं रोटी बनाने की मशीन भी आ गई है और तो और जरूरत की सभी वस्तुएँ घर बैठे ऑनलाइन खरीदी जा सकती हैं । पहले हर छोटे बड़े कार्य के लिए घर से निकलना पड़ता था, इस तरह हमारा शरीर स्वस्थ रहता था किंतु अब बिना परिश्रम के सब कार्य घर बैठे पूरे हो जाते हैं। इस तरह से हम सभी आलस्य की चपेट में आते जा रहे हैं जो कि सेहत का दुश्मन है। अधिकतर लोग कम उम्र में मोटापा, ज्यादा वजन और अनगिनत बीमारियों का शिकार हो रहे हैं।

अत: हमें शारीरिक श्रम का महत्व समझना होगा और दैनिक जीवन में इसे उतारना व महत्व देना होगा।

आलस्य ही मनुष्य के शरीर का शत्रु है

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

मनीष कुमार सिंह
सहायक अधीक्षक

इन दिनों हम देख रहे हैं कि एक शब्द काफी चर्चा में है, यह शब्द है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) इस शब्द को कॉलिंस डिक्शनरी द्वारा 2023 का 'वर्ड ऑफ द ईयर' घोषित किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) से आशय है कि मशीन द्वारा ऐसे कार्य करने की क्षमता जो आमतौर पर मनुष्य द्वारा किए जाते हैं तथा जिन में मानव बुद्धि एवं विवेक की आवश्यकता होती है। विगत वर्ष में OpenAI का chatGPT एप्लीकेशन काफी लोकप्रिय रहीं हालांकि यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक छोटा सा भाग ही है ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कई जगह किया जा रहा है जैसे मौसम का पूर्वानुमान लगाने के लिए या कृषि के क्षेत्र में मृदा निगरानी, सिंचाई व फसल काटने के सही समय की सूचना के लिए। इसका उपयोग न्यायपालिका द्वारा भी किया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर (SUVAS) प्रणाली की मदद से क्षेत्रीय भाषाओं में निर्णयों का अनुवाद किया जा रहा है। यह आम आदमी की न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करने की दिशा में अहम कदम है। इसकी बढ़ती लोकप्रियता के चलते तथा भविष्य में इसका उपयोग देखते हुए सी.बी.एस.ई. ने इसे अपने 9 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है तथा आई.आई.टी हैदराबाद ने बी. टेक प्रोग्राम (AI) में प्रदान करने का निर्णय लिया है।

परंतु जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही AI के इस्तेमाल में कुछ चुनौतियां भी हैं जैसे एक सर्वे के अनुसार AI आने वाले दिनों में लिपिकीय नौकरियों का स्थान ले लेगा, जिससे बेरोजगारी की समस्या आ सकती है। AI हमारे रवैये का लगातार अध्ययन करता रहता है तथा डाटा एकत्रित करता रहता है जिससे हमारी निजता का हनन हो सकता है, आपने देखा होगा कि जब भी हम अपने मोबाइल पर कुछ खोजते हैं तो फिर उससे संबंधित सामग्री ही हमारे सामने आती रहती है। इससे जुड़े खतरों में से एक डीपफेक के बारे में भी आपने पढ़ा होगा। डीपफेक वह टेक्नोलॉजी है जिसमें रियल वीडियो में दूसरे का चेहरा फिट कर फेक वीडियो बनाया जाता है जो देखने पर रियल लगता है इसका दुरूपयोग किया जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक आने वाले दिनों में और ज़्यादा प्रभावी होगी। ऐसे में AI का दुरुपयोग रोकने के लिए कानूनी ढांचा विकसित करने की आवश्यकता है, साथ ही AI की निगरानी कर इसका इस्तेमाल सही दिशा में करने की आवश्यकता है।

अहमद फराज

पुत्र श्री अलीम हुसैन

एकता

सब का दिल एकता सबकी जान एकता।
अपने प्यारे वतन के लिये एकता एकता।।

दोस्त हिन्दू मुस्लिम सिख या ईसाई हो।
सबके मन में हमेशा रहे एकता एकता।।

कोई मज़हब नहीं बैर सिखलाता है।
हर मज़हब ने कहा एकता एकता।।

जन गया मन गया सारा तन गया।
हमारे जब दिलों से मिटा एकता एकता।।

वतन प्यारा रहे आपसी भाईचारा रहे।
बस दिलों में महकता रहे एकता एकता।।

रुठ जाये अगर कोई कभी आप से।
जाकर दिखलाओ तुम एकता एकता।।

सबका धर्म है बना हमेशा एकता के लिये।
कुछ पाखंडी चाहते नहीं एकता एकता।।

कोई कहता है ईश्वर तो कोई कहता खुदा
कसम से यह सब एक हैं एकता एकता।।

कोई चाहता नहीं हम किसी से लडें।
फिर यह क्यों मिट रहा एकता एकता।।

सबके मन में रहे सबके धरम में रहे।
मालिक ऐसा कर दो करम एकता एकता।।

हमारी तुम्हारी जब कोई आपसी बगावत नहीं।
तो मिटा क्यों रहे हो यहां एकता एकता।।

विक्रांत श्रीवास्तव

कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

स्वच्छता

स्वच्छता है हम सबकी ज़िम्मेदारी,
जिसे हम सबको मिलकर है निभानी।

कुछ तुम रखो ध्यान, कुछ हम रखें ध्यान,
मिल बांटकर ही होगा पूरा, स्वच्छता का यह अभियान।

व्यवहार में लाओ स्वच्छता को, दो अपना पूरा योगदान,
तभी बन सकता है, हमारा देश महान।

गीला-सूखा, कूड़ा-कचरा, इन्हें सदा अलग ही रखना,
कहां फेंकना है इनको, यह हम सबको मिलकर है निश्चित करना।

पॉलिथीन के इस्तेमाल का करो सभी अब बहिष्कार,
जल-थल के जीव जंतुओं पर होगा ये बड़ा ही उपकार।

जहरीला है कण-कण इसका, अवगुण इसके कई प्रकार,
सुन्दर सी धरती पर इससे मचा हुआ है हाहाकार।

हम अपनी आगे की पीढ़ी को क्या छोड़ कर जाएंगे,
दूषित पानी, प्रदूषित वायु बस यही धरोहर कहलाएंगे,
महामारियां उन्हें सौंपकर, उनका जीवन कष्टमय बनाएंगे।

जब हम स्वच्छता की आदतों को अपने अंदर लाएंगे,
झूम उठेगी धरती, अंबर, नदियां, वातावरण मुस्कुराएंगे।

स्वच्छ भारत का यह सपना तभी सत्य हो पाएगा,
प्रत्येक मानव जब जागृत होकर स्वच्छता को लक्ष्य बनाएगा।

बूढ़े आदमी की खुशी का राज

योगिता बिष्ट
पुत्री श्री गिरीश चन्द्र

किसी गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। वह दुनिया के सबसे दुर्भाग्यशाली लोगों में से एक था। पूरा गाँव उससे परेशान था। वह हमेशा उदास रहता था, वह लगातार शिकायत करता था और हमेशा ख़राब मूड में रहता था।

उम्र बढ़ने के साथ उसके शब्द और जहरीले होते जा रहे थे। लोग उससे बचते थे, क्योंकि उसकी शक्ल देखते ही खुद का मूड भी खराब हो जाता था। लेकिन एक दिन, जब वह अस्सी साल का हो गया, तो एक अविश्वसनीय बात हुई। लोगो को ये सुनने में आया कि वह बूढ़ा आदमी आज खुश है, वह किसी भी चीज के बारे में शिकायत नहीं कर रहा है, मुस्करा रहा है, और यहां तक कि उसका चेहरा भी चमक रहा है।

पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। सभी इस बदलाव के पीछे के कारण को जानने के इच्छुक थे। ग्रामीणों ने बूढ़े आदमी से पूछा, 'बाबा आपको ये क्या हो गया। आपमें इतना बदलाव कैसे आया।

बूढ़ा आदमी बोला, 'कुछ खास नहीं'। अस्सी साल तक मैं हर चीज को ठीक करने में लगा रहा, वह वक्त खुशी ढूंढने के पीछे भाग रहा था। लेकिन यह बेकार था और फिर मैंने खुशी के बिना जीने का फैसला किया और वर्तमान जीवन का आनंद लेना शुरू किया इसीलिए मैं अब खुश हूँ।

कहानी की शिक्षा:
खुशी का पीछा मत करो, अपने वर्तमान जीवन का आनंद लो।

स्वास्थ्य हेतु

डाल चन्द
वरिष्ठ पासपोर्ट साहयक

खुली वायु सेवन करें, नित्य करें व्यायाम।
क्रोध और चिंता तजें, कीजे अपना काम।।

कीजे अपना काम सदा ही, कम खावें ग़म खावें।
जितना अधिक हो सके, उतना निर्मल जल पी जावें।।

शाकाहारी शुद्ध ही, भोजन कर हरषायें ।
ताजी सब्जी शाक की, मात्रा दे बढ़ायें।।

मात्रा दें बढ़ायें मिले तो दूध, दही,घी खावें ।
इन सबके सेवन से तन की शक्ति बढ़ती जावें।
लम्बी उम्र मिले और निरोगी काया पावें।।

समस्याओं का रोना

सोनी बिष्ट
पुत्री श्री गिरीश चन्द्र

एक बुद्धिमान आदमी था। लोग बार-बार समस्याओं के बारे में शिकायत करने बुद्धिमान व्यक्ति के पास जाते थे।

एक दिन बुद्धिमान आदमी ने उन्हें एक चुटकुला सुनाया और सभी लोग हंसी से झूम उठे। कुछ मिनटों के बाद, उन्होंने फिर वही चुटकला सुनाया और उनमें से कुछ ही मुस्कुराए जब उन्होंने तीसरी बार वही चुटकुला सुनाया तो कोई भी नहीं हंसा।

बुद्धिमान व्यक्ति मुस्कुराया और कहा:

''आप एक ही मजाक में बार-बार हँस नहीं सकते, तो आप हमेशा एक ही समस्या के बारे में सोचकर बार- बार क्यों रो रहे हैं ?''

शिक्षा - चिंता करने से आपकी समस्याओं का समाधान नहीं होगा, यह सिर्फ आपका समय और ऊर्जा बर्बाद करेगा। इसलिए चिंता छोड़कर अपनी ऊर्जा को समस्या का समाधान करने में लगाएं ।

सच्चे दोस्त की निशानी

गिरीश चन्द्र
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

दो दोस्त रेगिस्तान से गुजर रहे थे। यात्रा के दौरान किसी बात पर बहस के दौरान एक दोस्त ने दूसरे को थप्पड़ मार दिया। जिसे थप्पड़ मारा गया, उसे चोट लगी। लेकिन उसने बिना कुछ कहे, रेत पर लिखा, ''आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मुझे थप्पड़ मारा''। दोनों दोस्तों को काफी देर चलने के बाद एक तालाब दिखा, जिसमे दोनों स्नान करने लगे। जिसको थप्पड़ मारा गया था, वह थोड़ी गहराई में चला गया तो वह डूबने लगा, लेकिन दोस्त ने उसे बचा लिया।

बाहर निकलकर उसने एक पत्थर पर लिखा ''आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मेरी जान बचाई'' अब जिस दोस्त ने थप्पड़ मारा, उसने दूसरे से पूछा, ''जब मैंने तुमको थप्पड़ मारा तो, तुमने रेत में लिखा और अब, तुम एक पत्थर पर लिख रहे हो, ऐसा क्यों ?''

दूसरे मित्र ने उत्तर दिया,

''जब कोई हमें ठेस पहुँचाता है तो हमें इसे रेत पर लिखना चाहिए, जहाँ क्षमा की हवाएँ इसे मिटा सकती हैं। लेकिन, जब कोई हमारे साथ अच्छा करता है, तो हमें उसे पत्थर पर लिखना चाहिए, जहां कोई हवा उसे मिटा नहीं सके।''

शिक्षा - अपने जीवन में छोटी मोटी चीजों के कारण अपने रिश्ते को खराब नहीं करना चाहिए।

स्वच्छता पखवाड़ा

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली
स्वच्छता पखवाड़ा
17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2023

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

हिन्दी दिवस एवं कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार

समाचार पत्र की झलकियाँ

पासपोर्ट के लिए 'आधार' नहीं रहा जन्मतिथि व नागरिकता का आधार

जन्म प्रमाणपत्र समेत आठ पहचानपत्रों में से एक जमा करना जरूरी

'ऑफिस के कामकाज में हिंदी का ही प्रयोग करें'

विदेश यात्रा से पूर्व 'हिंदी की सीख' दे रहा पासपोर्ट कार्यालय

उत्कृष्ट कार्य में पासपोर्ट कार्यालय रहा प्रथम

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक में छमाही रिपोर्ट की समीक्षा हुई

जासं, बरेली : आयकर भवन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्ध वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें शहर के केंद्र सरकार के 51 कार्यालयों, निगमों,उपक्रमों, केंद्रीय विद्यालयों के कार्यालय प्रमुख मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ आयकर आयुक्त संदीप कुमार ने दीप प्रज्वलन कर किया।

बैठक में छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई और राजभाषा नीति की चर्चा की गई। बैठक में विगत छमाही में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए केंद्रीय कार्यालयों की श्रेणी में पासपोर्ट कार्यालय को प्रथम, छावनी परिषद को द्वितीय तथा मण्डल रेल प्रबंधन को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी तरह निगम,उपक्रम,विद्यालय की श्रेणी में केंद्रीय विद्यालय पूर्वोत्तर रेलवे, केंद्रीय विद्यालय इफको आंवला, इंडियन आयल कार्पोरेशन को भी पुरस्कृत किया गया।

पासपोर्ट में उम्र की गवाही नहीं देगा आधार

पदयात्रा निकाल स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

बरेली, वरिष्ठ संवाददाता। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली द्वारा सोमवार को स्वच्छता के प्रति जागरूकता पद यात्रा निकाली गई। पासपोर्ट कार्यालय से शुरू हुई पदयात्रा सेलेक्शन प्वाइंट चौराहे से होते हुए डेलापीर चौराहे तक पैदल मार्च निकाली। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि 16 जनवरी से 31 जनवरी तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसके लिए मंत्रालय द्वारा दी गई कार्य योजना के तहत विभिन्न दिवसों के ... में संबंधित अलग-अलग ... की जा रही है। इसमें पासपोर्ट अधिकारी द्वारा सभी को स्वच्छता शपथ दिलाई गई, कार्यालय के शौचालयों, गलियारों तथा अनुभागों में सफाई के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इसी क्रम में सोमवार को स्वच्छता के महत्व को फैलाने के लिए पदयात्रा निकाली गई। मंगलवार 30 जनवरी को स्वच्छता पर काव्य पाठ प्रतियोगिता होगी।

पासपोर्ट कार्यालय में मनाया स्वच्छता पखवाड़ा

बरेली, अमृत विचार : विदेश मंत्रालय के निर्देश पर बरेली पासपोर्ट कार्यालय पर स्वच्छता पखवाड़ा के तहत सोमवार को पासपोर्ट अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई। साथ ही कार्यालय के शौचालयों, गलियारों और अनुभागों में सफाई की गई। पासपोर्ट कार्यालय प्रियदर्शनी नगर से डेलापीर तक स्वच्छता पदयात्रा निकाली गई। इस दौरान दिनेश सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

प्रशस्ति-पत्र

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, (राजभाषा विभाग)
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली।

प्रशस्ति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक 01 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक की अवधि के लिए राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन में कार्यालय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली का कार्य बरेली नगर स्थित समस्त केन्द्र सरकार के कार्यालयों में प्रथम स्थान पर रहा है। इनके उल्लेखनीय कार्य की प्रशंसा की जाती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह विभाग/संगठन भविष्य में भी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

दिनांक : 21-11-2023

(एन.एन. पाण्डेय)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त, बरेली
एवं
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

(संदीप कुमार)
मुख्य आयकर आयुक्त, बरेली
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

बाल-कलाकार

प्रतिष्ठा सिंह
पुत्री श्री शैलेन्द्र सिंह

आराध्या सिंह
पुत्री श्री शैलेन्द्र सिंह

पत्रिका प्रकाशन समिति

सुमन सक्सेना (सदस्य) | कौशल सिंह (सदस्य) | संदीप शुक्ला (उपाध्यक्ष) | शैलेन्द्र सिंह (संरक्षक) | दिनेश सिंह (सम्पादक) | मो. आतिर अंसारी (सदस्य)

स्वच्छ भारत सुंदर भारत

''सीखने से रचनात्मकता आती हैं,
रचनात्मकता हमें सोचने की तरफ बढ़ाती हैं,
सोचने से ज्ञान मिलता हैं,
ज्ञान आप को महान बना देता हैं ।''

– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

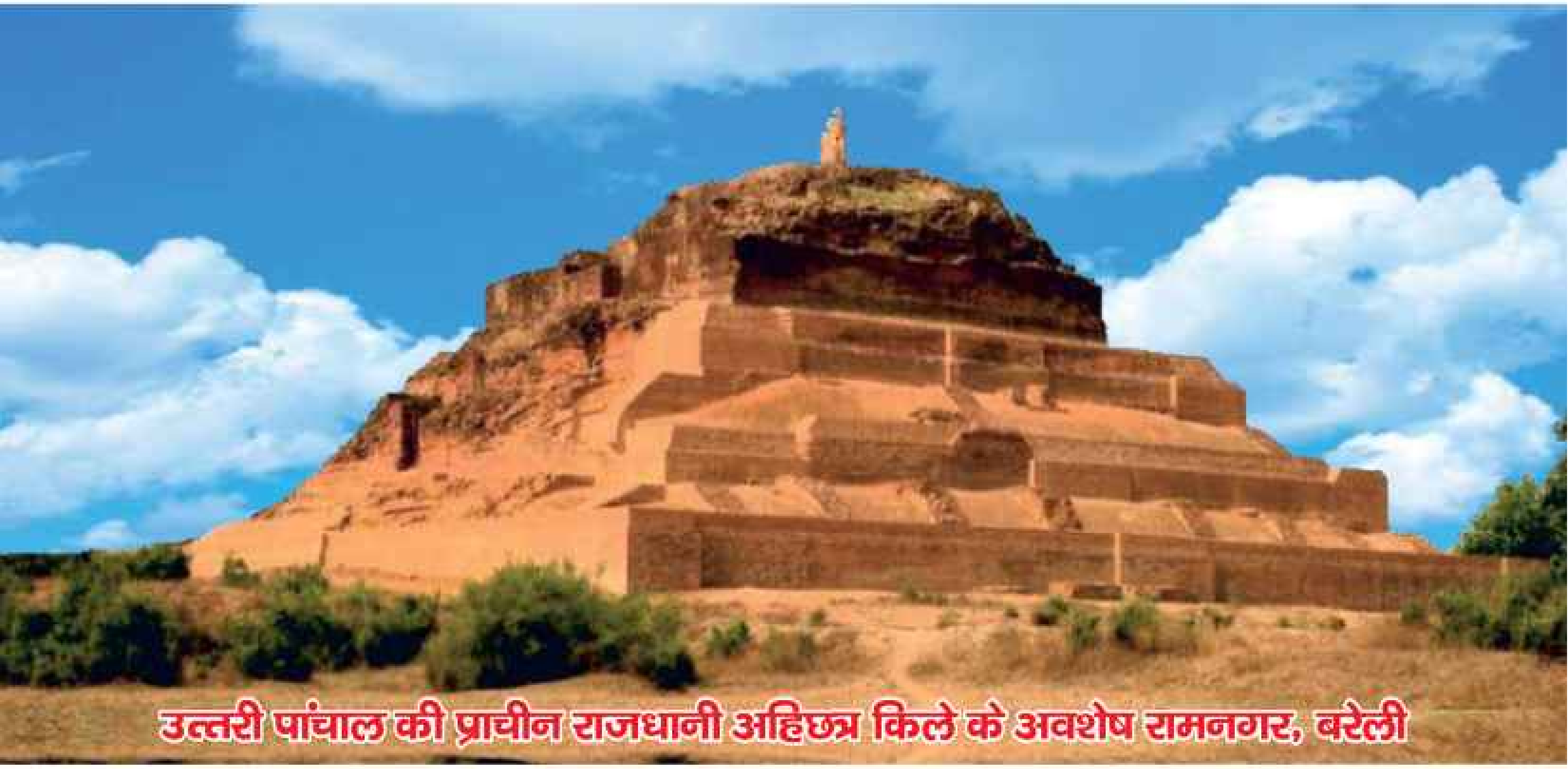

उत्तरी पांचाल की प्राचीन राजधानी अहिछत्र किले के अवशेष रामनगर, बरेली

''आज हमें ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पंथ
के भेदभावों को समाप्त कर देना चाहिए,
तभी हम एक उन्नत देश
की कल्पना कर सकते हैं ।''
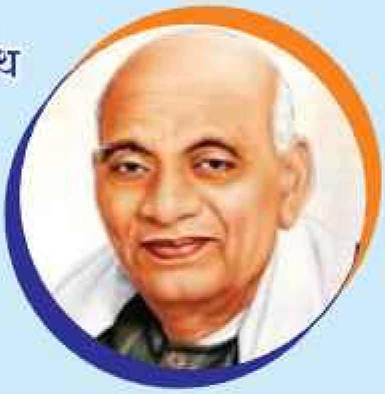
– सरदार वल्लभ भाई पटेल